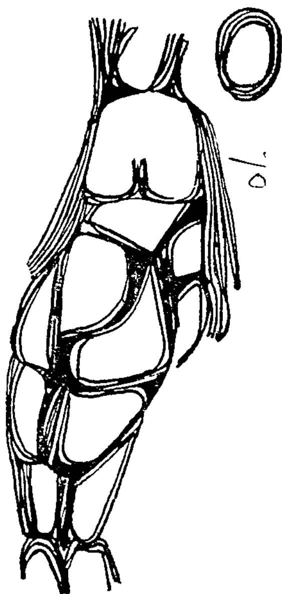
राई-राई रेत

(कहाणी सग्रह)



बी. एल. माली 'अशांत'

बी० एल० माळी 'अशांत'

मोल : बीस रुपिया । पैलो संस्करण : 1986/आवरण : शशि परगनिया/
प्रकाशक : भूमिका प्रकाशन, 3/343 मालवीयनगर, जयपुर (राज०) मुद्रक :
हिन्दुस्तान प्रिन्टर्स, कुचीलपुरा, बीकानेर (राज०)

RABE-RABE RET : Short Stories By B L MALI 'Ashant'
Price · Rs 20 00

डा० कन्हैया लाल शर्मा नैं
घणं कोड सूं

सरैवार

समन्दर

"मा रोटी ...!" पगा रै लूमतो राजू बोल्यो, "मनै भूख लाग मेली है मा !" सोना बी रै सूवै मुंडै कानी देवी, बीरी निजरया उणरै मुंडै माथै लागगी रोटी री सनीहो बीरो खेत, बीरी वा चवदा किलो दूध देवण आळी गाय, भूरती बकरी, मुडघोडा सिंगा आळी भैंस, धोळिया बळद बीरी आख्या मे फिरै लागा। दोरी हुयोडी रोटी मायै बीरो आखो सोच टिकग्यो भरपूर फसल भरयोडो खळो, नाज रै बोझ सूं दबती गाडी बीरी आख्या माकर निसरबा लागगी । चाणचूकै खुड्डी कानी खुडको हुयो। बीरो ध्यान टूट्यो दा लाम्बी सास लेयी, अर राजू नै लेयर खुड्डी कानी चलीगी।



महानगर रै लामा-लामा हाथा नै आछी तरिया दिखावतो उपनगर मालवीय नगर। ई नुवै नगर माय उबासी लेवता कतार मे ऊभा हाऊसिंग बोर्ड रा बण्योडा मकान है—धूळ सू ऊमा करयोडा धोळप सूं चमकायोडा। बीचूबीच कठै-कठै कच्चा टापरा है, जिका री इतियास आ मकाना तळै दब मेल्यो है .। इण बस्ती रै बीच मे अेक छोटो सो माटी रो घर है। सिर पर जिणरै घास-फूस है। डील उघाडो है, इण जूनै घर मायै बारै ऊभा रूख छाती दे राखी है । फळसं कनै खेजडी है। अेक-आधी पडयाडी उदास झूपडी है। झूपडी कनै खुड्डी अर टैणा री अेक टपरी है, सोना आ इज छान-झूपडा मायै छाती दिया बैठी है ।

खुड्डी में सासू अर देवर रैवै । खाणो अठै सासू-बहू दोनू बणावै। टैणा री टपरी माय पाच जीव जो लुकाव—सोना उणरो धणी अर तीन टाबर। कनै इज बीरै जेठ जिठाणी रा छान-झूपडा है।

सोना रोटी बणा लीनी। डोकरी चून ओसण रैयी है। कनै जीवाराम बैठ्यो है। डोकरी नै देख गैरी सवेदना मे भर बो बोल्या—"दो रोटी डोकरी मा नैई पो र दे देगी तो के हाथ घस जावै ?' सोना की नी बोली। जीवाराम री निजरया लो री परात मे चून ओसणती डोकरी पर टिकगी। कोई साठ सू ऊपर उमर . .दो दो बेटा .. .बहुवा ...अर ....

बुढ़ापो, वींरी ग्रांख्या सामी लैण म ऊभा हा। डोकरी भी ठक्कड़ हुई धून पर जोर दे-दे वींनै नरम करबा मे लाग मेली ही, ग्रर जीवाराम री निजरया मुळकता सबधा नैं ग्रोळमें ही। सोना रोटया नैं थाली माय मेल टैणा री टपरी कानी चलीगी।

या डोकरी रै बीचलोडै बेटै री बहू ही। जीवाराम इण बस्ती मे हाऊ सिंग वोर्ड रै मकानां नै ग्रायोडो या रो ई बिरादरी रो हो। वो मुड्ढी मे बैठ्यो हो। वी रै कनै डोकरी रो छोटो ई छोटी बेटो ग्यारस्यो बैठ्यो कापी में स्कूल रो काम करै हो। वो ग्यारस्या कानी निजरयां फेरी ग्रर बूझ्यो—कुणसी क्लास में पढ़ै ?

ग्यारस्या री उमर कोई तेरा-चवदा साल री होगी ही। फीकै चेरै सू लागतो कै बचपण दोरी दिक्कतां मे सू निसर रैयो है। जीवाराम फेरू डोकरी कानी निजरयां फेरी ग्रर बूझ्यो—"खरचो किया चलावै, डोकरी मा!"

—'रामजी चलावै, बेटा।" रामजी पर जीवाराम नैं विस्वास नीं हुयो वो फेरू बाल्यो—किया ?

—'ग्रायणरा ग्राय र ग्रो, ग्यारस्या कानी हाथ करती वा बोली, साग-सब्जी बेचै।

—किता-क पीसा बच जावै ?

इतरै मे सोना पाछी ग्रायगी। बाली इयां ई दिन तोड़ी करा, बचै के! कोई दो-चार रुपिया, पण के करा!

— दो-च्यार रुपिया मे काम चाल जावै!"

—' चालै तो कोनी पण चलाणो पड़ै।" डाकरी बोली। सोना कैवै ही—"म्हारो कोई जीणै म जीणो है!"

—'दो-च्यार रुपिया ई. बस! वो मन ई मन बोल्यो ग्रर बोलबालो हुयग्यो।"

ग्राज वो सुबै-सुबै सोना रै काम सू ई ग्रायो हो। उणरी पाड़ोसण वीं नै परेसान करै ही। जद जीवाराम री बहू दिनुगै दूध लेवण नैं ग्राई तो वा उण नैं कैया हो—राम, पिल्ली रै पापा नैं पवकायत भेजज्यो. ।

□ □

तीन-च्यार बरसा पैली तो ग्रठै लोगा रा खेत हा, वै ग्रठै मोकळा घान ग्रर सब्जी उगावता ग्रर मजै सू गुजरान चलावता पण ग्रब! बर-

बादी !

अेक दिन सहर ऊफण पड्यो। समन्दर री दाई बुहा लेयग्यो—खेत खळा अर रिजक-रोटी । खेता पर खड्या हुयग्या मकान ईंमकान। हळ अर खळा दबग्या आंरै तळै । दूर दूर तांई खेता रो नाम-निसान कोनी। हळ सोतियैं री बात कठै ! जठै हरयाळी रमती उठै अब सूना आबहीण ढूंडा। धरती रा हिमायती उजड़ग्या। किरसाण साफ, जमीन साफ।

इण उपनगर मे जठै आ लोगां रा छान-भूंपडा है, बांनै भी उठै सू हटा-वणै खातर कोरट में जी तोड कोसीसा चाल रैयी है। जठै नीं जाणै किताई बरसा सू अै लोग बसग्योडा है उठै बांनै अब रैवण भी नही दियो जावैला। जठै आंरा पुरखा आपरा गाढै पसीनैं सू हेमाणी मेली वा अब विनास मे गुम जावैली सिरकार सहर अर अै लोग!

आपरा घरा नैं बचावण सारू अै लोग मुआवजो हाथां मे लियां कोरटा रैं चक्कर लगा य रैया है। पर भी के अै बचा सकसी आपरा घुरसाळा ??? अर ऊपर सू अठै आवण आळा पढ्या-लिख्या लोग आंनैं सतावै, लूण बुरक।

सोना आपरी टाबरी रो अस्तित्व बचाणै रा जतन करै। उण रै देवर नैं गरीबी मुंडै मे घाल्या बैठी है। बी रो बस कोनी। जेठ भी गरीबी सू जूझ रैयो है। मास कळरै। ग्यारस्या खातर वा जीव जिण सारू भी पाडोस मे आई ठुक राणी कैवै—वार काढ ! खाजरातू नी। मेरी भैंस रै लाठी री मारी। बच्यो गिरग्यो। किताक दिन मायनैं राखसी। बीरा छोरो लाठी लिया फिरै। ग्या-रस्यो आयोडी भैंस नैं चिनेक घेर दीनो हो। देली हुवैला पण राड कै कोई हाथ-पग थोडा इज हुवै। डरा र राखलैं री कोमीसा। पाडोसी कोई बोलै कोनी। हा मे हां करण सारू बीरी जात रो अेक बीरै ई डोळ रो घर। राड-गोधम। ढाकरी नै लेर रा दिन याद आजयावता। बींरी आख्या भर आवती। कदे तो वा सोचती इण बरबादी सू बचर कठै ई चली जावै।

□ □

अेक दिन घरा रै मुंडागै सू अेक गडक भौं-भौं कर परो चल्यो गयो। आथण रा बाबू (सोनारो धणी) आयो तो वा बोली—हाऊसिंग बोर्ड आळो वो नोल्यो (जे ई एन नवल) आयो हो। कैरै हो—अै झोपडी भापडी उठा लिज्यो नही काल मैं नखवा देवू ला।

—'भूसो हुसी बापडा' टुकडो नाख देती। कोरट मे भी तो देवां हा। ओ मुआवजो आ तांई रै मिल्यो है। वो निसकारो नाख्यो। बाबू रो मन कियो ई

करै लागो। वो वँवै हो—वे दिन हा, राजू री मा !.. बापू मठै वैठर चिलम पीवता...मा वनै वैठर कलेवो घालती. आपां पाणत करता अर मा रा हलो आवतो— अरै आज्याओ, पेला कलेवो करलयो. अर आज ! घेलै रै अदम्यां री सुणणो वोरट रै चक्कर लगाणो, मार्‌या-मार्‌या मुह लटकायां मजूरी खातर फिरणो. 'कँवता-कँवता बाबू रो गळो भरघायो। रूंधेड़ै गळै सू वो बोल्यो—' किया ई लागै पण ये हूवै !"

☐ ☐

फळमें माथै ऊभी सेजड़ी चिनेर सै हवा रै चहर्क सू हाल उठती। सोना रो सुभाव ई इसो ई हो। सदा गैर-गम्भीर अर सान्त रैवण आळी रै अब क्दे की-क्दे की री चरचावां मू बेचेनी रैवती। जिण घर माथै वा छाती दिया बैठी ही वो फगत ढाचो इज हो पण सोना रो वो मुरग हो, महल हो, सै की हो बीरो।

डोकरी इण माटी रै घर रै चिनेक भी आंच नी आवण देती। आ बीरै परवार री छाया ही, बीरी खुद री जगा ही। हाऊंसिंग वोर्ड आळा आवता तो वा वानै सुणा देवती—थानै चाय-पाणी रा पीसा चाये तो सीधा-सादा माग लिया करो...'मकान' गिरावणै री तो बात दूर थे इण रै हाथ भी नीं लगाय सको. राज ई हार रैयो है ई सू" वै डोकरी रै मुडै कानी देखबा लाग जावता।

☐ ☐

आज वेसी ही। बाबू आय र याद दिराई तो डोकरी बोली—बाबू देख ! भगवान भी ठालो बैठ्यो आपणै अो के रोग लगायो है वेमाता रा भी अ खर खूटग्या, बेटा इणी वास्तै।" अेक हाथ सू आख पूछ र वा बोली– जमी तो माता ही बेटा। बीरै जावता ई आखो सहारो टूटग्यो। मुसीबता रा डूगर आय र ऊभा हुयग्या कंवत कंता डोकरी री आख्या फेरू गीली हुयगी। आख्या पूछ र वा बाली—'तू जा।"

बाबू सू उठ्‌गा नी गयो। डोकरी बोली—इया के कायरी लावै ! मनै ता छप्‍न्या याद है। जीन्दा रैसी नर तो और बणासी घर। मैंनत आपणा पिराण है, बेटा।

सजळ आख्या पूछ र बाबू गयो परो। बीरै जावता ई दुरगा आयगी। बाबू बीनै सदा ई मोणी मासी कँवतो, टाबरिया दादी मा। किणी नै अो ठाह नी पड़तो कै आ री दा जात है। आवता ई वा बोली—दादी काई करै है ?'

—'वैठी हू बाई आजरा !'

—'अब तो बैठणो ई बैठणो। मे तमे-म वी रै चली जावा। दुरगा कैयो। डोकरी बोली खेत री ता बात दूर बाइ अब तो टापरा री ई मड मेली है। आज ही बाबू पत्नी पर गयो है।"

—"म्हारै भी वै गया है, भाण! राम जाणै अठै रैवणो हुसी कै नी लामी सास लेयर वा बोली—अब तो राम है, कै राज है। फरू लामी सास लीनी अर बात बदलती थकी कैयो—सुण्यो है, ठुकराणी सोना रै लारै पड मेली है।

"आदमी रै लारै पडवा सू काई हुवै है, भाण आपणै ता राम ई लारै पड मेल्या है।"

—"काई कैवै है वा?"

—"कैवै है—हथकडी पैर वू ली। मारस्यू म्हारै आदम्या सू हाथ-पग तुडवाबू नी।"

—"इयर अ पलै हुक्म पे के बूडी है? खाज्याबर! घरड ई ई इस्टेदर नै कैवू ली। वो राडरी मैस इज बोल लेज्यावैलो न रैमी बास तो न बाजसी बासरी! जे कान्यां होर नै कह दियो तो वै राड नै समूठी नै ई उठा लेज्या- वैला।'

— आपणो काई लैवै है बाई! वक-वक कर आपू आप ई रैज्यासी।

—नही भाण, गोलै रो गह जुग हुवै!

वै बाता करती रैयी।



भूखा मरता काई करता! खेतीखडा नै मजूरी रो आदत पडी। ज्यू-ज्यू बसती बसी बसती आछा रा दिन फिरया समझदार लोग नुवा हजगार ढूढ लिया। डोकरी रा बेटा सुबै-स्याम दूध बेच लेवता बीच म सबजी ले आ ता वा दही बिलोतो ता लोग छाछ भी नी छोडता अर झटदणी पीसा बट जावता, वै पुराणी व ता भूलबा लागग्या। पण अचाणचक ऐ क दिन वा पर गाज आय र पडगी। रोवती-बिलखती सोना अर बीरी ि ठाणी सामान भेळो करै ही। चौक राज रा अफसरां अर सिपाया सू भर मेल्यो है। अब वै कठै जावला, ओ सुवाल! डोकरी नै गैरी झळ आयी। वा बोली—म्हारी जमी लेयर थे म्हानै बरबाद कर दिया, फेर भी नीं धाप्या! अब थे म्हारो घर खोसबा नै आया हो!! थै मांगो हो म्हारै? के नियो है म्हे था सू —थारी सिरकार म् ?? घर छाडर म्हे रूळता फिरा!!! ओ म्हारै गुमरोजी रो घर है। मैं

इण मे परणी माई मर पण भाजी जावूंलो, फेंर र या गोटण उठाई मर बोली-बाप रै मूंधावणो आवो हो कै नही !!!

सै री निजरयां डोकरी माथै लागगी। मैं ट्रेफ निया देख रैया हा। जीवाराम रै दीमाग मे समन्दर हबोला मारणो। नै रा उछळ-उछळ किनारा काटै लागो। वो फेंवै हो—मा! सहर रै किनारै रैणो अर समन्दर रै किनारै रैणो दोनूं इकसार है .।

इतरै मे राज रा सिपाई डोकरी रै हाथ सूं लाठी पकड लीनी।

□ □

"आज तो भोत बुरी अन्याय हुयगी बाबा !"

"के रै मगतू ?"

"पीराणा नै अेक सांढ मार गेरयो, सकीना नै हिड़कायोड़ो गडक खाय-ग्यो अर बिचारै लाला कुत्ती रा कसाईडो पग काट दीन्या—तीनूं अस्पताल मे है।"

"है।" सूरजाराम रै चैरै पर हैफ चढग्यो। चिलम हाथ मे पकड़्यां वो बोल्यो, "के बात हुयगी ही रै मगतू ?"

"ओ तो ठाह कोनी बाबा।"

"कठै तू रिगली तो नी करै है ?"

'बाबा, मैं आप सू रिगली करू ?"

"मैं वेरो पाड़र आवूं हूं दिखा... कैवतो थको वा चाल पड़यो।"



लिखमसर ! गणेसजी रो मिंदर ! चौरायो ! ओ ही चौरस्तो है पीराणा रो ठाईचो। रेतड़ी री कुढी माथै काकरा पड्या है। दिखणाद कानी मुंह करयां वो काकरा चुगया मे लाग मेल्यो है-उघाड़ै डील। कमरयां मे लगोटी है फगत।

कनो कर नीसरतो परतू अेक डबली पीसो कुढी माथै गेर जावै। ठण कै री आवाज सू पीराणै रो ध्यान टूटै अर परतू पर जा टिकै। वो आवाज देवै—ओ मोट्यार ! पाछो आये।

पीराणा री आवाज सुण र परतू कनै आयग्यो।

पीराणो बोल्यो, "तेरो पीसो पाछो लेज्या। छोरा खातर चीज ले जाई।"

'मेरै कनै और पीसा है, बाबा।"

"होसी।" उठतो थको वो बोल्यो, "लै !" पीसै नै वो परतू री हथेली पर मेल दियो अर बोल्यो, "अब पट्टी दे।"

परतू ओरै मुंडै कानी देखतो चल्यो गयो। पीराणो पाछो आपरै काम मे

लागग्यो । थोड़ी ताळ पछै बिड्दू पाछो बड़ र नीसरयो । पीराणा नैं कांकरा चुगता देख र बो बोल्यो, "ओ के करै है पीराणा ?" 'दीसै कोनी ! घास फूटेडी है ?" थोड़ो नरम पड़तो बो फेरू बोल्यो, "भाई अै कांकरा धरती री कोख मे रहवै ! मैं सार र भेळा करूं हूं । आता-जाता टाबरां रै पगां मे रूप जावै । छोरा ऊभाणा पगां भागै रै भाई !"

बिड्दू वीरी बात ध्यान सूं सुणै हो । जद बात पूरी हुयां पछै भी उणरो ध्यान नी छुट्यो तो पीराणा बोल्यो, 'के सोच मे पड़ग्यो ? घरां जा भाई, टाबर रोट्यां खातर उडीकता होसी ।"

बिड्दू चल्यो गयो । पण पीराणा री बात वी रै दिमाग सूं गयी कोनी । वो सोचता-सोचतो जावै हो ।

बिड्दू रै गया पछै सूकळी सेठाणी राबड़ी सूं भर्योड़ो कचोळो हाथ मे लियां आयर खड़ी हुयगी । बनै ऊभी वा कैवै ही, "पीराणाजी, ल्यो राबड़ी पील्यो !"

बिना वी कानी देख्यां ही पीराणो कैयो, "भीत रै कनै पड़ी हांडी मे घाल दे ।"

सूकळी मिंदर री पेड़िया रै कनै पड़ी हांडी मे राबड़ी घाल दीनी अर पाछी आयर बूझी, "पीराणाजी अबकी बर तो लिछमी रै बापू नै गया भोत दिन हुयग्या । कद आसी ?"

"परस्यूं आ जासी । कोई नैं कहजे मतना भलो ?"

परसूं आ जावैला ? वा मन ही मन सोचती बोली, 'आछ्यो" । वा भीर हुयी । गेलै चालती वा सोच रैयी ही-इणरो मतलब तो 'बै' भीर हुयग्या ! पीराणा री बात झूठी कोनी हुवै । ......

सूकळी रै पछै मिसराणी आई । खीर रो बाटको हाथ मे लियां वा कैवै ही "ल्यो पीराणाजी खीर पील्यो ।"

"हांडी मे घाल दे ।"

"हांडी म पड़ी राबड़ी नैं देख र मिसराणी बोली," इणम तो राबड़ी है, पीराणाजी । पी होल्यो । कांकरा तो पछै ई चुग लीज्यो ।"

"भागज्या ! आई है-खीर लेर ! क्यूं चोखो हवर मिनखां जणां बाना खाबा लागगी दीसै ? कड़वै कांकरा पछै चुग लेज्यो ! ।"

'नाराज क्यूं होवो, पीराणाजी ! आछ्यो ठिकाणो तो आपरी किरपा सूं मिल्यो है ।"

"फेरू बा ही वात ! रामजी रै सजाग न तू मेरी किरपा कहवै ! मै भैयो हो नी कै भागज्या ।"

"ओजूं कोनी गैबू पीरागाजी ।"

"तो हाडी मे घालज्या ।"

खीर नै राबडी मे घाल र मिसराणी बडबडावती चलीगी । ओ पीरागाजो भी के घतो के आदमी है ? राबडी म ही खीर ! ....

दोपारी हुवै लागी ! तेज तावडो ! पीरागो तावडै री किलकी मे बूढी सामै बैठ्यो राबडो अर खोर मिला हाडी नै जीब सू चाटै हो ।

सडक माथै सकीना जावै ही । काल्थै सू रंगोडा दात । सावळो चेरो । सिर पर उलझ्योडा बाळ । कमर्‌या मे मैली सलवार अर इसा ही मैलो कुरतो । पीरागा देख र कैयो, "सकीनडी, चेता सै चालजे । तू पान रो पीक थूक थूक र सडक खराब करै है ।"

"क्यू ? सडक थीना रै बा री है के ?"

"चोखो । तू पार बोल ।"

सकीना आगै चलीगी । पीरागो आपरै काम मे लागग्यो । जद बा महावार पान आळै री दूकान माथै आय र खडी हुई तो महावीर बोल्यो, 'के चावे सकीना ।"

'पान ।"

'किसा ?"

"अेक ।"

चूनो रगावतो महाबीर बूझ्यो, "कोई मेहपाणी रो भी आसार है, सकीना ?"

"आज हील, खाळ–नाळ सै सही ।" सकीना बोल र चिमकी, जाणै उण सू न कैवण आळी बात कैयोजगी हुवै । महावीर पान लगाय र देवतो कैयो, 'तो इण बात पर पान खा, सकीना !"

सकीना गुम–सुम सी चाल पडी । महाबीर कमीज पै'र झट दुकान सू उतर्‌यो अर सट्टै आळा रै कनै जाय पूग्यो । बो जी भर पीसा लगाया । विरखा रा भाव ऊचा हा ।

सट्टै मे पीसा लगाय र ज्यू ही महावीर आवै हा तो गेळै मे उणनै नाता-बुत्ती मिलग्यो । महाबीर बोल्यो, "असलाम आलेकुम ।"

"आलेकुम असलाम । क्यू आज कोई विसेस वात है के ?"

"आपरो महतारी चाहिजै ।'

'आज स्याम नै हा जाऊंगो । पण सिनारो मरीना नै पपा'र दूध पेडा सुवाजे ।"

सूव ल्या ।

'जणा जा ।'

महावीर नै आज मानमान हुगा लागो । वो सडक-सडक जावै हो । भूता आठी गळी सू टाबरा री आवाज आवै ही-लालाकुत्ती बावळीऽऽऽ ! बादरोऽऽऽ !

□□

सूरज आपरो डेरै कानी जावै हो । निगमसर पर अेक बादळो मडरावै लागी । ज्यू ही हवा वीनै निचायी, छाटा चू पडी । फिर फिर र री झडी लगगी । पीरागा उछळतो-कूदता बडो चोवड कानी आय रैया हो ! उणरै मूडै सू आवाज नीसरै ही-अं हो ओऽऽ !

चौवडिय कुवै री छतरी म लालाकुत्ती अर सकीना ऊभा छप-छप पडतै पाणी कानी देखै हा । पीरागा री आवाज उणा रै काना म पूगै ही । वा फकै आवै हा ।

छतरी कानी लपकतै पीरागा नै सकीना कैयो, 'आज तो महावीर पान आळै रै गैरा होवग्या ।"

'मरवा दिया, सकीनडी ! '

'पण अब के होवै ?'

'थे दोनू वदे मरवा र रैस्यो ।'

"अरे पीरागा ! मौत सू के डरणो ? मौत तो आज नी तो काल आणी ही है ।'

'पण बेमाता बेमौत क्यू मरणो चावा हा ?'

'कोई गरीब रो भलो हो ज्यावै ता आपणा के जावै ?"

अं सट्टे आळा भात बुरा हुवै, सकीनडी । वदे कोई मरगो, तो समझ लीज्ये आपा भी मरगा ।

"कोई नी मारै । वा देख ! बरखा थमगी । आवो चाला !'

लालाकुत्ती पैला नीसर्यो, उणरै पछै सकीना । पीरागो छतरी मे ही बैठ्यो रैयो ।

□□

अेक दिन पीरागा री वान सू अर लालाकुत्ती अर सकीना रै प्रयार सू

तीन मर्या-अेक साढ, अेक गडक अर अ न कसाई । अर आज ? आज ताभोत बुरी अन्याप हुयग्यो । सूरजाराम असरताळ रै आंगै गड्यै फूलजी कम्पाटर नै बूझ रैयो हो-डागदर साब पीरागोऽऽऽ ?"

वो पार पड्यो, सूरजराम ! फूलजी लामी सास लेरी ।

"पार पड्गो !"

'हां !"

"कठै आप रिगली तो नी करो हो डागदर साब ?

तू कैंडी बात करै, सूरजाराम !"

'सकीनाऽऽऽ ?"

"वा भी पार पड़ी । लालाकुत्ती ठीक है पण वीरो पग काटणो पडगो ।"

'डागदर साब, आप बचा नी सक्या वानै ?

'बचावण आळो तो भगवान है सूरजाराम ! '

'आप भी भगवान रो रूप हो, डागदर साब ।"

'पण भगवान तो नी हूं ?'

'बडो बुरो हुयो सावऽऽऽ !" उणरो गळो भर्यायो । वो बोल्यो, 'पीरागा नै लोग गैलो कैवतां पण वो गैलो नी हो डागदर साब । सास ढीली छोडता वो बोल्यो, 'बी री कोल म धरती माथै पड्या काकरा रडक्ता । वानै वो सो र' भेळा करता । पण असली काकरा कद भेळा हुया ! आज भी कडकै डागदर साब । आज पोछ र वो बारयो, 'भोळो हा न, इण वास्तै ई बी री बात पिल जावती । पण लोग बीरै लारै पडगा ।"

'आ रमतै रामा रै कनै के धर्यो हा ? पण लोग मार . ।"

'साढां री सोई उतारण आळा कोनी डागदर साब ! सुण्यो है, बडा लोग तो पाळै है आनै ! ! !

'के पतो भाई !"

'पता क्यू नही डागदर साब ! आव पनार र देखलो, सरीफ आदमी दुखो है ।"

फूलजी बात बदलता थका बोल्या, " हां अेक बात है, पीरागो मरती टेम कैयो हा मेरै भाई सूरजा नै कह दीज्यो । वा मनै बाळै नही, गाड दे । . आ चाल !

सूरजाराम मूंडो लटकाया फूलजी रै लारै हुयग्यो ।

□□

फर्तैपर आली सडक पर तादो कॉलेज है । उणरै उत्तराद कानी करता पीरागा री सैनाणी अेक चूतरो है । कनै ही सकीना री मजार है ।

लाला कुत्ती पीराणा रै चूतरै कनै नीलो नाड करया बैठ्यो है। सूरज आराम करण सारू उतावळा हुय रैया है। वा देखो, छितिज रै बी पार ! सूरजी पग टेक दीन्या। वा बैठग्यो है– तळै।

चूतरै सूं आवाज आई लालाकुत्ती सूरजी छिपग्यो है !

हां पीराणा।"

आवाज बंद। अंधारो बढ रैयो है। लाला कुत्ती चूतरै र सिर लगाया ऊंघ रैयो है। चूतरो बोलै-लाला कुत्ती सोवै है कै ऊंघै है ?

"जाग रैयो हूं, पीराणा।'

"बी संतानियां रो काई हुयो ?"

'मनै डर लागै पीराणा, तू बीरा नाव मतना ले।'

इतरै ई मजार बोल पडै लालाकुत्ती, अब डरणै सूं के हुसी ? अै लोग तो संतानी करैंला–वे रोक-टोक। आज आरो जमानो है। व्यवस्थाही खराब है, लालाकुत्ती!"

"उपाय बता ?'

"चुप रैय बोलै मतना!" मजार चुप हुयगी। चबूतरो बोल पड्यो, "हालताई रात बाकी है, लालाकुत्ती। सुवै री लाली रो रंग देख्यो है ?'

"हां।"

"जद अैडो हुसी तद काम बणसी। चबूतरो कैय र चुप हुयग्यो।

लालाकुत्ती बैठ्यो सुवै री वाट उडीक रैयो है आज भी। अर रात ? भोत है।

◻◻

गुदड़ी रो दरद

'बस अेक ही !"

सलमा रै कनै वा अेक ही रोटी ही। अर वा रोटी वा हमीद री थाळी मे मेल दीनी।

खुदा-ना-खास्ता बो और रोटी कोनी मागी नहीं । हमीद रोटी खायर उठग्यो। सलीमा लामी सास लेयो।

वै घर म तीन जणा हा—मिया, बीबी अर अेक टाबरियो। टाबरियो हालताई छोटो हो—दूध्यो पीतो। हमीद रा अमी-अब्बा तो जद वो छोटो सो हो तद ही गुजरग्या हा अेक घर हो बीरै अब्बाजान रो बणायोडो, बीनै करजै री अेवज मे सेठ ले लियो। वो आपरी फूफी रै अठै पळ्यो हो। जद बीरो ब्याव हुयो उण रै कोई दो बरसा पछै फूफी भी फोत हुयगी। इण रै पछै हमीद धक्का बस्ती मे अेक छोटे सै जमी रै टुकडै पर काची ईटा रो अेक डाळियो खडो कर लियो। जिण नैं फाटखडा अर खीपा सू लाद र छाया कर लीनी। अेक छोटी सी खुड्डी खडी कर लीनी अर अठै रैवै लागो।

कमावण नै तो बै दोनू मिया बीबी ही कमावता पण कमाई रो फगत नाव ही हो। धधो कोई खास नी हो। सलमा ऊन री कोटड्या मे कतर करया करती। पण लारला पद्रा बीस दिना सू ऊन कमती आवणै सू उण नै ओ काम भी नही मिल रैयो हो। वा घरा बठी मन मसोसबो करती।

हमीद रो धधा भी मदो हो घर री हालत खस्ता ही।

रोटी खायर बो डाळिय मे आयग्यो। क्यीज गळै माय घालतो थको वो क्वै हो—बे करा ! अक कानी तो धधो खुस्क दूजी कानी मैंगाई ! काळ रो सिर फटै तो आ मैंगाई तो कमती हुवै। सै चीजा मैंगी गरीब आदमी कीकर जीवै ?

सलमा की नी बोली। हमीद कमीज पैर र बीडी सिलगाई अर माचै माथै बैठ र पीवै लागो।

वो कोई पच्चीस-छब्बीस रै अडै गडै हुसी। सलमा उण सू पाच बरस

छोटी ही। पण उमर मे गरीबी रो दरद हो। सलमा नै रात रा इज फगत एक ही रोटी नसीब हुई ही पण आज तो वा भी नही!!! वा टाबरियै नै गोदी मे लिया माचै रै कनै आगणै माथै बैठी ही। हमीद आडो हुवग्यो। वो चुप हो पण गम्भीर हुयोडो चैरो की बोलै हो। माथै पर खडी सळाटा कोई गैरी चिन्ता री कहाणी कैवै।

बीडी बुझायर वो उठ्यो। ऊभा हुवतो वो कैवै हो, "चालू, आटै-दाळ रो जुगाड करू ....। हमीद बारै आयग्यो। ढाळियै रै सा'रै ऊभी आयरी सुळी नुमा पान्नी री बण्योडी मुनेबत दुकान नै कांधै माथै लीनी। जद वो चालवा लाग्यो तो लारै ऊभी सलमा कैवै ही—आवती वेळा आटो पकायत लावज्यो। आयरै आया ही ।"

वा अ ये बोलती, हमीद बीच मे ही बोल्यो, 'आज तो आटो ही के बेगम गोस भी लावूंला! मेळो है, सेठ सूं ठीकसिर सौदो लेयर निसरूंला तो ... । कैवतो-कैवतो वो बारै आयग्यो।

सलमा उणनै देखै ही। हमीद आंख्या सू ओझळ हुवग्यो हो। पण सलमा री आख्यां अबै भी रास्तै पर लाग मेली ही।



वा टाबरियै नै माचै पर सुवाय बरतण माज्या। खुड्डो बद कर परो वा पाछी ढाळियै माय आयर बैठगी।

उणरो ढाळियो बियां तो ढाळिया रा मजाक करै ही पण वो उणरो सा'रो हो। वा बीरै ही तळै सिर लुकाती।

लारलै पाच छव दिना सू वा आगै-पेट रैयर भी चुपचाप गिरस्थी चलावै ही। वा इण बात री ठाह ताई अपरै खाविन्द नै नीं हुवण दियो। रूखी, सूखी अर भूखी रैयर भी वा दिन काढै ही। पण अब भूख बीनै बस मे करै लागी, अर वा सबर रत ही। चाण चूकै टाबरियो रोवै लागो। वा गोदी मे ले लीन्यो बीनै अर बोबा मुंह मे दे दीन्यो। गोडा हिला-हिला वा बीनै जरावै ही। पण भूख्यो टाबर फगत हिलाणू सू ही कीकर चुप हुवतो? बोबा मे दूध कोनी। खाया बिना दूध क्यारू आवै? जद सलमा नै खाली बोबा रो ख्याल आयो तो वा दरद सू भरीजगी। वा टाबरियै नै कांधै रै लगायर उठी। घडै रै कनै मिल्टी रै मुचीडो गिलास नै भर परी टाबरियै रै मुहडै रै लगायो अर पाणी प्यावै लागी बीनै। टाबरियो सन्तोष लेयर चुप हुवग्या। 'बडो स्याणो है' कैवती बीरै सिर पर हाथ फेरती पछै वा पाछी आयर सागी जगा बैठगी।

थोडी ताळ पछै टाबरियो फेरू रोवै लागो। कोरै पाणी सूं भूख कीकर बुझती? उणरी खुराक बीरै बोबा मे कोनी ही। वा पीड मे काठी भरी

ज्योडी वहलावै ही उणनै—गोर गाई— गोर गाई पीज्या ! गोर गाई—गोर गाई पीज्या ! म्रा चिटली ! म्रा मिटसी ! म्रा लग लगावणी ! म्रा गैलो बतावणी अर म्रो ठोसो !! म्रेक-म्रेक म्रागळी रो पिछाण करावतो वा वैवै ही—गोर गोई—गोर गाई पीज्या ......।

टाबरियै री म्रागळया बीरै हाथ में ही। बी रो ध्यान परै हुयग्यो। वो जोरामरदी ही खेलै लागो। खेलता-खेलता बीनै नींद म्रायगी। पण सलमा बैठी ही। बी री म्रास्या म लबालब दरद भरीजग्यो। वा बीनै बारै नी निसरवा देणं रा जतन करै ही। वी नै खुद री तो चिन्ता को ही नी पण टाबर नै बिलखता नै देखर वा माय ही माय टूट जावती, किणी नै ठाह भी नी पडतो।

म्रागणं पर म्रास्या लगाया वा बैठी ही म्रर बारै पून फर-फर वैवै ही।



हमीद सौदा लयर म्रापरी 'दुकान' माय तरतीब सू जचायो। पाछो सेठ, रै कनै म्रायर वो बोल्यो, 'हा तो सेठा कित्ता रो हुयो सौदो ?" सेठ कंवै हो, "पन्द्रा रूपिया रा डब्बू पैतीस रूपिया रा चस्मा, बीस रूपिया री पीपाडी म्रर पच्चीस रूपिया रा डमरू इण तरिया कुल पिच ण मे रूपिया रो हुयो। 'म्रापरी वही बद करता थका वो बोल्यो "म्राज तो मेळो है, इत्तो माल तो निसर ही जासी।'

'देखो, म्रल्ला-मिया म्राज तो देखेगा ही!" कंवतो थका वो डब्बू फूला-फूला र टागै लागो। दूकान सजगी। रग-बिरगा डब्बू ऊपर उडै हा। उणनै कांधै रै लगाय र वो उठाई म्रर चाल पड्यो। पीपाडी रो म्रावाज म्रावै ही—पीsss ! पीsss।

म्राकास बादळा सू भरयोडो ! ज्यू ही पींपाडी बजावतो वो चोपडियै कुवै कनै म्रायो, जोर री म्राधी म्रायगी। म्रर म्राधी लारै मेह। हमीद भाज र सामनै प्रेस रै दरूजै माय म्रायर ऊभो हुयग्यो। म्रबार ही बीरो माल गळ जावतो कई डब्बू फूट जावता।

बरखा बरसै लागी। प्रेस रो गेट लोगा सू भरीजग्यो। म्रावण म्राळा वैवै—थोडो थारी दूकान नै तो म्रेक कानी कर बीरा ऊभा तो हुवा! ..

हमीद म्रापरी दूकान नै भीत रै म्रडा लीनी। म्रर खुद बीरै म्राडै ऊभो हुयग्यो। इतरै म बीरो म्रेक भायलो म्रोर म्रायगो। बीं रै हाथ म हैड—पम्प हो म्रर कांधे सू हुवतो थको गळै माय म्रेक थेलो। हाथ मे कई फूट्योडा कई फूल्योडा ढब्बू हा। वो हमीद रै कनै म्रायर खड्यो हुयग्यो।

पम्प थेलै माय घाल वो गोजियै में सू बीडी-माचीस काढी म्रर हमीद कानी करतो थको बोल्या, ल्यो हमीद भाई।

हमीद दो बीड़ी सिलगाई । अेक आपरै साथी नै दे दीनी अर दूजी आपरै होठां रै लगा लीनी । दोनुंवां रै मुंह मे धुंवो हो । पण हमीद रै चैरै पर पड़योड़ी चिन्ता री लकीरा मुंहडै सूं निरसतै धुंवै माय धुवै रै परवारै की ओर भी बतावै ही । बीड़ी रो सुट सार र बीरो साथी उणनै कयो," आज तो हमीद भाई मेळो सूखो जातो लाग्यो ! सुणर हमीद चमक्यो । बी नै लाग्यो जाणै कोई बीरै देयी हुवै । की समळ परा वो बोल्यो अल्ला-मिया के सिर लाज सबीर ! अेक लामी सास लेयर वो फेरूं बोल्यो, 'मेह तो बरसयां भला, होणी हो सो होय ! वो फेरू सास लेयी अर बोल्यो 'अठै तो हालतांई बूहणी ही को करी नी !"

'मैं काई कर लियो । मुसकिल सूं अेक रूपिया री रेजगी बणी हुसी ?"

"अबार थम जावै है ! मिया तो आज आठ नो वजा ताई थयो हुसी ।"

"तकदीर मे लिख्यो है वो तो कठै जावै कोनी, सबीर अर बिना लिख्योड़ो...."वो आगै नी बोल सक्यो । बीरै मुंहडै रो थूक सूखग्यो । ऊभा लोगा माय सूं कोई बोल्यो, "रूकबा रो नाव ही मतना लेय बीरा, आख्या फाड़ता-फाड़ता तो आज निठ आयो है । बरसवा दे ।

"बाबा !, म्हारै रोकी थोडी ही रूवै, म्हे तो बाता करां हा ...।"

"कोई आछी बात करो, बीरा !"

हमीद आगै नी बोल्यो । वो चुप हुयग्यो । गेट माथै ऊभा लोगां री आख्या सामै सड़क माथै लाग मेली ही । सै री निजरयां माय अलग-अलग नजरियो हो। हमीद सोच मे डूब मेल्यो हो, सबीर सामै देखै हो .... ।

सिड्या आयगी । बरखा कोनी थमी । गेट मांय ऊभा लोग भीजता थका भी जावै लागा । थोड़ी ताळ पछै नो गेट मे फगत दो आदमी रैयग्या—अेक हमीद अर दूजो सबीर ।

सबीर कैवै हो-"हमीद भाई, अब तो आ दोरो ही थमती लागै । आज वो मारया गया ।"

हमीद बोल्यो, "तू तो कुंवारा ही थो धंधो तो कर लियो हुसी, अठै तो आज बो भी को कर सक्यो नी ।"

'काम हुयग्यो हो ?'

"रमजान रो छोरो बेमार हो । दवादारू लेयर गयो हो ।"

"तो रमजान र ?"

'थारै नवोड़ो है, हमीद बोल्या-" काई करां यार आज मान कोटरया ने रुपया री ऊन भी कोनी, नही थारली भाभी ही वीं ने थारै .... ।

"कोई जोर ! किणनें कैय दया ? सुणें भी कुण, हमीद भाई ?

हमीद अर सबीर सब्बर कियो ऊभा हा । पण वरखा पग नीं छोड़्या । आखिर सबीर धीरज छोड दीन्यो । हमीद भाई अब तो चालण मे ही सार है ! बरखा थमेंली नी ।"

'तू चाल भई ! मैं तो बता बरसतें मे किया चाल सकू ? समान खराब हुयग्यो तो सेठ रा पीसा कीकर चुकेला ।

सबीर चल्यो गयो । प्रेस रै गेट माय ऊभो हुमीद वरखा रै थमणें री बाट उडीकै हो । पण आज तो इन्नर राजा धरती पर बेजा ही राजी हुय मेल्यो हो ।

थोडी ताळ पछै चौकीदार आयग्यो । अेक सूं दोय हुयग्या । चौकीदार कैवे हो–बरखा माडी ही थमें ! लागे, आयणा रो आयोडा पावणो रातवासो लेयर ही जासी ।"

"पण ... ।" हमीद सू आगें नी बोलीज्यो । चौकीदार कैवे हो, "सामान तो म्हारें कनें मेलज्या, सूवारे ले जाये ।"

"पण ... !!!"

चौकीदार कैवे हो, "जे वेम हुवें तो बात बीजी है ।

"नही चौकीदार साब ? वैम तो की भी कोनीं पण.......।

"काई ?"

"आज.......कमाई कोनी हुयी ।"

"पीसा चाये ?"

" ...... "

पीसा रो काई करसी ? दूकाना तो बद हुयगी ! इया कर, चून लेज्या । पण क्याने लेजासी ? सोचतो थको वो फेरू बोल्यो, "इया कर, पीपो ही लेज्या ! रात रात तो काम चाल जासी । सूवारें री सूवारें देखजे । सू वारें री सू वारें देखजे . कैवतो थको वो मांय सू चून आळो पीपो उठा हमीद रै कनें आयर बोल्यो, "लै, अबै देर मतना कर ! बरखा थमेंली नी । चून रो पीपो हमीद री आख्या समी हो । उणरै काना माय सलमा रा सब्द गूजें लागा .आवता चून पक यत लेयर आवजो । आपरै आयो ही ।

हमीद आपरी आख्या पोळी अर चून रो पीपो लेयर बोल्यो, "सुवै पाछो कर देवू ला ! थ रो काम काढ ।"

इण रो परवा मतना कर !

हमीद चल्यो गयो ।



बरखा सू गेला मे पाणी भरीजग्यो हो । कांधे माथे चून रो पीपो लिया हमीद जावै हो अर बरखा राणी नाचें ही—झूम-झूमर । धरती पर सगळै

पाणी ही पाणी हो।

जद वो घरां पूग्यो तो सलमा टाबरियै नै छाती रै चेप्यां डाळियै मे बैठी ही। टाबरियो बिलख-बिलख रोवै हो! सलमा री आंतड्यां माय दरद भर्योडो हो। हमीद डाळियै माय बड़तो कैवै हो—आज तो अल्ला मिया री मरजी ही अंडी हुवी, काई करां! फेर भी चून तो लै आयो है।

सलमा रै मुडै सू जबान नी उपड़ी। पीपो मेलर हमीद माचै माथै बैठग्या। वो कैवै हा, गुड्डी माय तो पाणी भरग्यो हुसी। ज्यू ही बीनै चुल्है रो ध्यान आयो, वो बाल्यो, "रोटी बणणी तो दोरी है। लागै, आज तो भूखा ही सोवणो पड़सी।

सलमा बोली, "नही, मैं रोटी पका लेवू ली। किया पकासी? क्या सू पकासी? चुल्लो तो भीजग्यो अर लकड्या भी। वो सास लेयर बोल्यो, "बेगम आज तो चून ही पाणी म घोळ र पी लवा! पैला तू पीलै। टाबर भूखो है।

"नही, मैं रोटी बणा लयू! अठै ही ईटा मेल लेसू।"

"पण बाळसी काई?"

'आ गुदडी!

'गुदड़ी!!।

हा, अल्ला मिया और बणासी! कैयर बा टाबरियै नै माचै पर सुवाय र ईट लावण नै बारै चलीगी।

सुबै अखबारा मे खबर छपी—बीकानेर मे पैली बरखा। लोग चैन री सास लेयी।

□□

थारै ब्याव रो बेस

अेकलै बैठ्यै-बैठ्यै रो जी अमूजै लागो । मा तो उठ र चाकी रै कनै बैठगी, अोर कोई ही कोनी जिण सू बात कर तो । बापू खेत गयोड़ा हा । मुरली भायो तो कदे-कदास ही घरा आता, वै खेत मे ही रैवता, भोजाई भी वारै साथै ही रैवती । गाव मे आदमी जावै तो कठै जावै ? सी घरां री बस्ती न बजार अर न अोर की । जी घुटै लाग' तो सोच्यो खेत ही हो आवू ।

घरा सू बारै आयो तो कोई च्यार बज्या हा । आकास बादळा सू भर-योडो हो । भादवै रो महीनो मनै अेक दम जवान लाग्यो ।

गोवै-गोवै मैं चालै हो । सामनै खेजड़िया नै देख र मनै टाबरपणै री बाता याद आवै लागी—मैं अर मुरली भायो गाय ढाडा नै लेयर अठीकर ही तो जावता । ....चदी ताई अठै ही कठै भागती थकी म्हानै मिलती । -राधा मुवा खारियो सिर पर लिया अठै ही आगै चालती दीखती । अतीत रै यथार्थ माय गुम्योडो जद मैं नरोदडा आळी जोहड़ी रै नेडै आयो तो सामै पसरयोडी जोहड़ी नै देख र मनै याद आवै लागी—आ वा ही तो जोहड़ी है, जठै म्हे खेत सू पाणी रा घडो ल्यावण रै मिस अठै आय र न्हाया करता । .. अेक दिन सिवकोरी पकड र मनै डूबोणो चायो ही नी ! ..मैं आज समझू हू कै सिव-कोरी मनै क्यू डूबोवणो चावती ही ।

जोहड़ी माय गेली-गेली मैं चालै हो । अचाणचक मेरी निजरया आगै चालता रिसाल माथै पडी । वा गुलाबी साडी ओढ मेली ही । मैं बीनै हेलो करयो—ओ रिसालss ।

वा कोनी बोली । वा लारै मुड र पकायत देखी ही । मैं खाहतो-खाहतो पग उठावै लागो । इत्तो ही वेगी मनै जूनी बाता याद आवै ही मैं अर रिसाल तो टाबर पणै मे ओबरा बणाया करता । बीद-बीदणी रो ख्याल करता... वा आपरी मा रो ओढणी ओढ र बैठया करती छोटी सी बीदणी । वा कित्ती सोवणी लागती !

आज बरसा पछै यकायक बीनै देख र मैं हेलो मार लियो हो । पण वा ब्यान दण वास्ते नी'तीनी हुयी कै अब वा जुवान हुय गी है, का फेर [illegible]

मैं वा भ्रेक ठाकर री बेटी है, का फेर इण वास्तै के गांव रो असर ईंल सूं उतरयो कोनी, स्यात चिप मेल्यो है ।

मैं चाल र बीरै कनै आयग्यो । म्हारै दीमाग मांय उठती अन्दाजी वातां सूं मुगती पातो मैं बोल्यो, "रिसाल मैं तनै हेलो करयो हो नी, तूं बोली क्यूं कोनी ?"

वा फेरूं कोनी बोली । मैं बीरै सागै चालतो थको कैयो, "के तूं गूंगी हुयगी ?"

वा बिना म्हारै कानी देख्या, रुखी सी बोली, "वो देख, थारो खेत ! जा मनै डिस्टर्ब मनना कर।"

"तो तूं कीं सोचती चालै है ?" मैं बोल्यो, ',मैं बतावूं, तूं काई सोचै है ?' मैं बिना उण रो हूंकारो लिया ही बोलै लागो, "वा ही नी, आपणै टाबर पणै री बातां ! आपां ओवरा बणाया करता । मैं बींद बणतो अर तूं.......।

'ईडियट ।"

बीरै मुंडै कानी देखतो थको मैं बोल्यो, "अंगरेजी मनै भी आवै है, रिसाल ! मैं भी यूनियरसिटी मे पढूं हूं ।"

'तो मैं काई करूं ।"

"वो ही जो सरीफ मिनख करै ।"

"तो के तू मनै हैवान समझ मेली है ?"

"मिनख तो नही । तू अेक ठाकर री बेटी है नी, इणी वास्तै थारै सब्दा माय सामन्तीपणै री बू आवै, अर .. ...."

"अर थारै सब्दा माय मटकां री राख, क्यूं कै थारो बापू मटका बणावै है नी, इण वास्तै ।"

"बकवास मतना कर रिसाल ।"

"मैं तनै बकवास करण सारू 'इनवाइट' (न्यूंतो) कोनी करी ही । भ्रो पड्यो गेलो, अर जा !"

मैं धन्यवाद कह दियो बीनै ।

मैं आगै निसरग्यो । वा म्हारै लारै-लारै आवै ही घरसू आळी कुई रै कनै बीरो खेत हो—म्हारै खेत सूं अळगो ।

बातां सूं म्हारो दीमाग भर मेल्यो हो । रिसाल बडै बाप री बेटी है ।... पढगी के, अपणै आप नै तीस मारखां समझवा लागगी ।.... .. थोथी अकड दीखावै । .. अब कठै है ठकुराई ! .... बडै बाप री बेटी ही तो पाळी क्यूं आयी ?... लेय आवती सात घोडा री बग्गी ! रस्सी बळगी पण बळ कोनी गयो....

म्हारो खेत ग्रायगो । मैं मुड़ग्यो । रिसाल ग्रागीनै निसरगी। पण उण री गुलाबी साडी री चिमक ग्रबै भी म्हारी ग्रांख्यां माय चुभै ही ।

म्हारै काना माय ग्रचाणचक सुणीज्यो—लालजी, थे कद ग्राया ?"

मैं चिमक्यो । चिनेक सभळगो थको बोल्यो, "ग्राज सू वारा ही ग्रायो हो भाभा । पण था सिर पर खारियो लिया कठै जावो हो ?"

"मैं ग्रर थारो भाई ग्राज बिडदसर जास्या ।"

"क्यू ?"

"सावरिया रै छोरो हुया हैं ।"

'सावर जी रै लडको हुयो है ! गई साल तो ब्याव ही हुयो हो ।"

'तो के ! थारो ब्याव हुज्यावतो तो क थारै नी हुज्यावता ।"

'नी-नी ।"

'थारो भाई तो थारी सगाई रूकमण सू करावण री सोच रैया है ।"

"थारी भाण सू !" मैं पळ भर मन ही सोचग्यो—बा ग्रणपढ गवार मेरी बहु बणेली ? मैं पलट र बोल्यो, "करावो तो सरी, भूठी बाता करो ।"

"थे ग्राज ताई हा ही कद करी ? ग्राज कैयी हो तो समझल्यो सगाई पक्की ।"

"नही भाभी ! मनै ग्रबार ब्याव-सगाई सू कांई लेवणो ! ग्रेक साल ग्रौर पढल्यू, इण रै पछै कैवू ला ।"

'ग्रेक स ल ठैर जासां, सगाई तो कराल्यो !"

'ना भई ! मनै तो ग्रै भंझट ग्राछा को लागैनी ।" सामै मुरली भाया नै ग्रावता देख र मैं बोलवालो हुयग्यो । भाभी ग्रागै निसरगी ।"

भायो कनै ग्रायर कैयो, 'बिजू मैं तो ग्राज सासरै जा रह्यो हू, तू ग्रा ही गयो तो रात रात खेत मे रह जाजे बापू ग्रेक दसोटण मे जावैला ।"

मैं चिमक कर कैवू "ग्रठै ग्रेकलो !"

"क्यू पैला कोनी रैवतो !"

मनै याद ग्रावै, हा, पैला तो मैं ग्रेकलो ही सोया करतो ग्रठै । च्यार खूटा गाड र .घास रो माचो बजा र । मैं कैवू, "पण ग्रब कोनी रैयो जावै भाया ।"

"ग्रब क्यू कोनी रैयो जावै ? तनै तो ग्रेकलो रैवणो रो ग्राछो ग्रभ्यास है ।'

"मैं सैमग्यो । की नी बोल्यो । भायो मनै कैवता ग्रागै जावै हा, "वादळ-वाई हो री है, मांचो मार घाल लीजे । मार कामळ पडी है, ग्रोढ लीजे ।

मैं पाण र भूली दै नी आगगो। बापू बैठ्या हा बठै। मां नैम र मैं मैं हा, "आज तू ठीक वेळा पर आयो है। मां नवी बात बताइस तैं आपणी है रात-रात रहणाये, थूं थारै बेटो बा आस्या हो।"

मैं हांसी भरती ही तो बापू बातां कर पड़ा भरया गया।

सूरज बळो लागो। मती पाणी लाड़्यो ल्यो, ताळा हियो कै है ही-बिच् ही ही रोटी लागता रैवे।

मैं बणी आगर राटी ने लोगी तो वै पाणी लिगरणा। आकाश सोय पाळजा। लाड़्यां मैं पाणी रा बाताद। मैं भूली न आगर रोटी लाई। बापू ही पाणी पीया नै थारै आगा तो देख्यो भरती गाणी स परखूर। ठाडी पाणी ही। ही। मैं लोटो भर र पाणी पीया तो आंखी आंख्यां लाई आयगी। मैं लाग र सोय आयग्यो। आगे गाणी बैठ्यो मैं खाट री आवाज सुणी ही। आणी मैं गैह री माटी-मोटी ल्हारां रा लाग र भूली रै लागी ही. तड़ कु। तड़ कु...। तड़ कुड़क.।

भरती स थारै सूं डरीजाणी। पर बीज आवती तो आगणी बीलगो।

हुया सोय ठंड। म्हारै मांय मैं लड़ लागी। बरसा री बंद हैन हुगी। थारै लाड़्या बाजरै रा सूंटा पर पड़ती बरसा री तड़ा-तड़ री बात सुणीजै ही।

अचाणचक गाँ बोली सुणीजै, "भाभी ऐ भाभी! "ओम ठाडो बरसा आगी है आज तो। मैं तो डरी भीजगी।"

किवाड़ री आवाज ही आ। मा भाज र भूली मैं आयगी। मैं मोदवाणी बैठ्यो हो। मा कैवे, "सुरती भाभीजी आप भठीनैं बैठ्या हो? थांरै मैं नी सुणी ही बोली।.... भाभी! ऐ भाभी! कोई बादरो है नी मैं, मां भरती लागे राम।

घराघर भीजती आगती। नींद भरो नैन मीलगो। मां बात र मा लाग रैगी। आ थारै नै मा कैवै ही —

भाभी कै ई गयी?"

"थारै नी र।"

'बीर सुण है ठे?"

"गाई बोली।" मैं कैवै, "भरती आगी है?"

'ठाडी ठंड है आज।

"थारा म्हारै बर्सा ता पेर ही गाजा है।"

"और कीं भी है ?"

"गुदड़ो ।"

"इया कर, कामळ मनैं दे दे अर गुदड़ो काढ र तूं ओढ लैं ।"

"क्यूं ?"

"तूं गुदड़ो ओढ लैं ।"

मनैं दया आयगी । मैं कामळ दे दीनी बीनैं । वा ओढ र अेक कानी ऊभी हुयगी ।

मैं बीनैं माचै माथै बैठण सारू कैवूं । पण वा जवाब देवैं– 'अवार बरखा थम जावैं है, मैं चली जासूं ।"

"मेह तो सूंसावैं है ! किया जासी ? आथण रा आयोड़ो पावणो जीम-जूठ र ही जावैं ।"

जीसा (बापू) ढूंढसी न, मनैं ।"

"फेर तूं चली जा ।"

"बिरखा बरसैं है नी !"

"वा तो है ।"

"तूं चिनेक बासते बाळ नी, मनैं सी लाग रैयो है ।"

"दियः सळाई रो ठिकाणो कोनी । के ठाह, वैं कठै राखैं ?"

वा आपूं आप माचै माथै आयर बैठगी अर कैवैं लागी, "थारलो गुदड़ो ओढा दैं ।"

"फेर मैं के ओढू ?"

"आधो तूं ओढ लीजे । देख ! कामळ आळी हुयगी ।"

"तूं सगळा गाभा सीला करसी । इया कर, तेरी साडी उतार र सूखा दै, नहीं मैं रात नैं अठै ठंड मे मर जावूं ला ।"

रिसाल चिमकती थकी बोली—"ईडियट ।"

"सरदी मे कामळ देयर आली करायी, बीं रो इनाम ईडियट ?"

वा नी बोली । बीजळी रै प्रकास माय उणरै डील री कंपकंपी मनैं कदे दीख जावैं । मैं भी कांपै हो । वा कैवैं ही मनैं, "बिजू मनैं गुदड़ो दे दैं, कामळ तू ओढ लैं ।"

"गुदड़ो गीलो हुयग्यो तो ?"

"कोनी हुवैं ।"

मैं कामळ ले लीरो । वा गुदड़ो ओढ र बैठ जावैं । मैं कैवूं, "गीली साडी उतार दैं ।"

"पैरस्यूं के ?"

बीजळी चिमकणें रें समचें मेरो ध्यान बापू री फाट्योडी धोती कानी गयो। मैं उठ र उताळ अर उण कानी करतो कैंवूं, 'आ बापू री धोती है, इणनैं लपेट लै।"

'वा उठी तो मैं बीनैं कामळ दे दीनी। वा आपरो पेटीकोट अर साडी उतार र सूखा देवै। बापू री फाट्योडी धोती माय भेळी हुय र वा गुदडै माय आय र ल्हुक जावै। ज्यूं ही आली कामळ म्हारैं लागै, मैं कैंवूं, 'इणनैं तो सूखा दैं।"

वा खाट रै पाया माथै गेर देवै बीनैं।

आधो-आधो गुदडो आढ्या म्हे बरखा रैं थमणैं री बाट उडीक रैया हा। अर बरखा ? तज हुवती जावै ही। बारै बाजरैं रै बूंटा सूं उपडती तडा-तड री आवाज अौर तावळी हुवती जावैं जावैं ही।

ज्यूं ही बीरो आलो ब्लाऊज म्हारैं डील रैं अडै, मैं कैंवूं, "ओ गीलो ब्लाऊज भी खोल दैं। म्हारा बुसरट पैंरलै।'

अंधारैं माय वा म्हारैं सूं बुसरट लेयर ब्लाऊज खोल देवै।

बारैं बरखा सूसाय रैंसी है। काफी टम हुयग्यो। बरखा कोनी थमी। रिसाल म्हारैं डील रैं चिपी बैठी है। मनैं नीद आवैं लागी। स्यात बीनैं भी लटका आवैं हा।

अचाणचक बीजळी पडबा री आवाज सुणीजी। म्हे चिमक्या। रिसाल मनैं पकड्या सुणैं ही-आकास गूंज रैंयो हो।

□□

बरखा थमगी। वा आपरी धोती लपटती थकी कैवैं ही, 'जे तूं नी हुवतो तो मैं आज मर जावती बिजू।'

'चालो तूं जीवती तो बचगी।'

साडी बांध परी वा कैंवैं, "तूं मनैं छोड आव!" मैं बीरैं साथैं हो ज्यावूं। वा कामळ आढ्या चालैं ही अर मैं बुसरट माय कांपैं हा। जद म्हे जोहडी मे आया तो सामैं बटरी रो चानणो आवतो दीस्यो। रिसाल कैवैं ही, स्यात जीसा आवैं है। मैं सैमग्या। बेटरी लिया वो मादनी नेडै आयग्यो। मैं पिछाण जावूं बीनैं। वो कैंवैं, "इणनैं कठै ल्हुका मेली ही तूं ? मैं बरखा मे ढूंढती-ढूंढता आखता हुयग्यो।

रिसाल् बीच मे ही बोलगी । मेरो पिंड छुट्यो । वा कैवे ही, जीसा आज तो बिजू ही बचायो मनै, नहीं ठड मे मर जावती ।

सैतानसिंघ बेटरी री चानणो मेर-मेर र रिसाल नै सावळ देख रैयो हो । मैं सोच रैयो हो, कठै पोल नी खुल जावै ।"

देख दिखाय र वै आपरै घरा चल्या गया । मैं म्हारै घरा आयग्यो । किवाड खडखडाया तो बापू बारै आया । किंवाड खोलता थका वै बूझ्यो, 'आयग्यो बिया ?"

"बरखा मे काई करतो, बापू !"

"गाय ठाडा बडग्या तो ?"

"कोनी बडै ।"

मैं कापतो थको माय आयग्यो । बापू किंवाड पाछा जड लीन्या ।

आखो गात सणक-पणै होरै हो पण म्हारी आत्मा खुशी ही ।

□□

बी दिन गात्र रेयर मैं पाछो जेपुर आयग्यो । अेक दिन मनै आफिस द्वारा माय रिसाल रो कागद मिल्यो । मैं उत्सुकतावश उणनै खोलर पढ़ै लाग्यो । वा कैवे ही—प्रिय बिजू,

म्हारी कानी सू स्नेहालिंगन स्वीकारजे । बी दिन खेत आळी बात रै पछै नीं जाणै क्यू बेचैनी सी रैवै ? की ठाह नी । पढाई मे भी मन कोनी लागै ।... ...

तनै ठाह है राजपूती हमेस अेक वर करै रिसाल अब दूजी काया री सुख नहीं लेवैली । मैं जाणू अो कठण काम है । क्यू कै जातिया री भीतां ऊभी है आपा रै बिचै । तू हिंम मतना जाये, नही मैं ......।

थारी ही
रिसाल

म्हारी आंख्या रै सामै गोत्र घूमतो निजरा पड्यो । फकाफक लिया मैं चालै हो ।

होस्टल मे आयर कुरसी माथै बैठग्यो । सामनै टेबल पडी है उणनै सर-काय र लिखबा लागग्यो—

प्रिय रिसाल,

थारो कागद मिल्यो । तू जिकी बाता लिखी बीं पर विचार करू तो

लागै, थारो बापू कोनी मानैला। राजपूत आपरी बेटी कुम्हार नै नहीं देवैला। तूं थारो विचार ही बदल लीजे। इण विषय पर बाकी बात तो मिल्यां ही संभव हुय सकै।

म्हारो कागद पूग्यो जीरै दूसरै ही दिन रिसाल जैपुर आयगी। वा मनै क्लास सू बारै निसरतै नै गेट माथै मिली ही। म्हे उठै सूं एन. आर. एस. सी. आयग्या।

बैरै नै कॉफी सारू कैय र म्हे वातां मे लागग्या। रिसाल आपरी बात माथै अडिग ही। वा साफ कह दियो हो—जद राजपूत आपरी बेटी मुसळमान नै देय सकै तो कुम्हार नै देवणै मे काई अडचण है ? बात इत्ती सी है बिजू कै ब्याव गांव मे कोनी हुवै। मतना होवा द्यो। पण पढाई पूरी हुया पछै इणनै कोई नी रोक सकै। सर्विस करांला तो बारै ही रैवणो पड़ैला ! उठै ही कठै घर बसा लेवाला।"

मैं कैयो, "म्हारै परवार कानी सूं तो किणी तरै री बाधा नी है, रिसाल, थारा जीसा नी मानैला।'

"तो के ब्याव नहीं हुय सकै ?"

' मा-बाप रो आसिरवाद तो लेवणो ही चाहिजै।"

"बिजू, जठै नासमझी हद पार कर जावै, अर लक्ष्य टूटतो निजरूयां पड़ै, उठै अंडै आसिरवाद री बात करणो अर कहणो समझ सूं परै री बात है !"

"तनै ही सोचणो है अै बातां !"

"मैं सोच लीनी है।"

"तो ठीक है।"

रिसाल आथणा री बस सू पाछी जोधपुर चलीगी। मैं बस पर छोड र आया हो बीनै।

दीवाळी पर म्हे दोनू गांव आया। बात फूटी तो गांव मे हाहो फूटग्यो। रिसाल आपरै बापू नै बात कहदी ही। म्हारै बापू रो जीणो दोरो हुयग्यो। राजपूत म्हानै डरा-धमका रैया हा। रिसाल नै समझा रैया हा।

सैतानसिंघ मनै गेलै मे टकरग्यो। वै मनै कैयो—थयू राजपुरा रो जवांई बणणो चावै ?" या री आंख्यां माय विरोध हो।

"आप गलत सोचो हो, ठाकर साब !"

'बातां बणावै ? वां री आवाज मे घण तो घमंड हो। मैं बोलतो डारै मे ऊभो बारो आयग्यो। वै बीच मे पड़ता थका बोल्या, "काई बात है, ठाकर साब ?"

"बात काई है ! यो राजपूतां रो जवांई बणबा री सोच रैयो है। इणै नै समझा दीज्यो, नहीं ......।

"नहीं काई ?'

"म्हारे काढ लेवू ला ।"

रुघो काको कोनी बोल्या । सैनानसिंघ म्हारे कानी देखता थकां चल्या गया । वारे गया पछे रुघो काको मनें कैयो, "बिजू ओ काम तो पटावें जगा ही मजो आवें ।"

किया काका ?"

'अँ राजपूत दूसरा री भाण-बेटिया नें भोत खराब करी है, बिजू ।"

"पण मैं वानें खराब नही करूला, काका ।"

"की भी हुवो, तू ब्याव कर ।"

गाव नें रूबळनो छोड र म्हे आयग्या । रिसाल जोधपुर चलीगी अर मैं जैपुर आयग्यो ।

☐☐

एम ए कर्‌यां पछे रिसालरी नौकरी जोधपुर विस्व विद्यालें म ही लागगी । मैं भी अठे ही लाग्यो ।

जद म्हे 'कोर्ट मैरीज' करी तो गाव वाला सू भरग्यो । म्हारे कनें तरै तरै रा समाचार पूगे लागा । जद म्हारे बापू री मौत री समाचार आयो तो मैं रिसाल नें लेयर गाव आयग्यो ।

बस सू उतर र जद म्हे घरा कानी जावे हा तो लुगायां म्हान बाडा चढी देखें ही, अर गाव माय अजीब सीक चुप्पी छाय मेली ही । आदमी आपरें बारणा माय खड्या म्हानें देखें हा पण कोई की नी कैवें हो । म्हे चाल र घरा आयग्या । घरा न भाभी मिली न भाई । मैं अठी-उठीनें देख्या-कोई घरा कोनी । ज्यू ही मैं मोडआळे ढालियें कोनी गयो तो किंवाड खुला हा । माय झांक्यो तो कोई कोनी दीख्यो । मैं माय आयग्यो । रिसाल भी आयगी । ज्यू ही कुणें मे माचें माथें सूती मा पर मेरो निजर पडी तो मैं देखतो देखतो रैयग्या । मा रें आखें डील माथें पलास्टर बध मेल्यो हो । म्हारें मूडें सू निसर्‌गी —मा, ओ के ?

मा रा होठ खुल्या । वा बोली "थारें ब्याव रो वेस है बेटा । मा री बोलो रें साथे दरद निसर्‌यो । वा कैवें ही, "थारें बापू नें .. ..रिसाल रा जीसा मार दीन्यो ...बिजू । . जान सू मार दीन्या ।" वा मुहफेर र रोवता थका कैयो, "मुरली अर भीरी बहू असपताळ मे है .. ...रिसाल रें जीसा नें पुलीस आळा लेयग्या ।"

मा री आख्यां सू दग दग पाणी वैवे हो । मैं अर रिसाल देख रैया हो— अेक दूजे नें ।

☐☐

उणियारो

तावड़ै मे ठंड ही। घड़ी कानी निजर गई—नौ बजण आळी ही। अचाणचक ध्यान आयो, आज तो यूनियन री मीटिंग है !... वेगो जावण री सोचतो थको मैं हेलो करयो—पाणी तातो हुयग्यो के ?

स्टोव रै सू साटै मे म्हारो हेलो स्यात पिल्ली री मा नै सुणीज्यो कोनी। मैं उथलै नै उडीकतो रैयो पण जवाब कोनी मिल्यो। कुडतो उतार र मैं तोळियो लपेटयो अर बारै आवण लाग्यो तो सुणीज्यो—न्हाल्यो ! सदराणी है।

"गरम कोनी करयो ?" मैं कनै आय बूझ्यो। जवाब मिल्यो, "स्टोव मे रोटी बणावण जोगो ही तेल है।"

"थोडो निवायो ही कर देता !"

"आज-आज तो न्हाल्यो ! के है अेक र मी लागमी फेर आखै दिन डील सोरो रैसी।

पिल्ली री मा री बोली म घर री मजबूरी बोली। मैं बोलबालो बाल्टी उठा लीनी। ज्यू ही चौक मे आयो बारै सू आवाज आई—रोटी-पीसा देवो जीsss !

सिणगारी मेतराणी री आवाज ही आ। पिल्ली री मा नै ठंड मे लिपटयोडी आ बोल्यो स्यात सुणीजी कोनी। जद दरूजै मायै कोई नी आयो तो वा ओजू बोली—थोडी तो म्हारो भी सुनोsss ! , पीसा-रोटी देवो ... !

मैं सिर पर पाणी रो लोटो गेरयो तो डील मे अेक दम धडधडी उठी। की तो पाणी ठंडो हो अर की हवा ही। ज्यू ही दूसरो लोटो ऊधावण लाग्यो तो कोजी सी आवाज सुणीजण लागी—आई है राड रोटी-पीसा मागण नै ! घर रै सामै तो आखै दिन कूटळा पडयो रैवै ! क्या रा पीसा ? पिल्ली री मा इण नै कीं मतना दीज्यो। .

मनै पिल्ली री मा री आवाज सुणीजी—काई बात है ? क्यू सू वारै-सू वारै रोळा करा हो ?'

वयाराळ कह हूं, मी नरम पड़ती मा बोली, "आ रांड रोजीना रोटी तो लेज्यावें घर काम कोनी करै घेलें रो।

"तो कुण करै ? ग्रापा तो करा कोनी। बिचारी मैलो उठावै रोटी-पीसा तो मागै ही।

"इण नैं कोई रोटी-पीसा नी देवणा है, हां। जे देया तो ठीक नी,है,हा!" बा गूंजी।

मैं तोळियो लपेटचा ही बारैं ग्रायग्यो। मनैं देख र मकान मालकण थोड़ी भेळी हुयी। मैं देख्यो, उण रा विधावापणैं रा गाभा लीर-लीर हुयोड़ा बीरै डील रैं चिप्योड़ा हा। गरीबी री धूळ बीरैं गाभा मांय रम्योड़ी ही। बा मनैं कैवण लागी-देखो जी पिन्नी रा पापा, जे थे, इण नैं पीसा देया ता आछी बात नी हुवैली! मैं इण नैं कोई भाव ही घर मे नी बड़ण देवू ली। ..

"ता किण नैं बडवा देस्यो' मैं बीच म ही बोल्यो, "ग्रग्या मे बडो भ्रेको है। ग्रै ग्रापां नै ग्रधाप लेवैला। पाखाना कच्चा है, घर सिड़वा लाग जावैलो।"

"सिडो भलां ही। पण मैं इण नैं तो कोनी बड़वा द्यू ?"

"पण क्यू ?"

"था राड नी तो ग्राछी तरियां पाखाना साफ करै घर नी ही झाड़ू काढे।'

मैं बोलतो जिकै सू पैलां ही मकान-मालकण रो छोरो मूळियो ग्रायग्यो ग्रर दूकै लागो-- मास्टर जो! जे ग्राप इण री लड सारो तो कठै ग्रौर जगा जाय र रैवो। इण घर मे तो मेरी मा कैमी उणी तरियां हुसी। ..

मुळियै री बात म्हानै ग्रखरी। पण मैं बी टिगर रैं बरोबर नी हुवणो चायो। मैं बीनै समझातो थको बोल्यो, 'ग्रा कोई लड सारणै ग्राळी बात कोनी मूळा। मैं तो कैवू हू कै जे दूजी मैतराणी नी ग्राई तो काई हाल हुवैला ?

बो बी नी बोल्यो।

मूळियो मनैं मास्टरजी कवतो जद कि मैं मास्टर हू कोनी।

सिणगारी चुपचाप ग्रा री बात सुणबो करो। ग्रब उण सू रैयो नी गयो या रोसा बळती बोली, "दूसरी मेंतराणी लगा र ता बेरो पाडो। देखस्यूं दिला म्हारै रंता कुण ग्रावै ? पी.ा देवणा पडसी। मैलो उठायो है महीनै ग्रेक ताई हराम रा कोनी मागू!'

'थारो कार है!" मूळियै रो मा री बोली म तातो ही।

सा पीसा दे! च्यार महीना रा तो तेरै हक रा ग्राज ताई कोनी दिया बद बड म्यारी बातें है। मेंतरी रा पीसा खाया तो कीड़ा पडैला-कीडा !

मूळियै री म सुणता ही उछळी। जमी सूं दगड उठा र बगावती ग्रोनी

"लै रांड, तनै तो मैं बताव्ं !"

सिणगारी भाडू भूंबारयो । वा बचगी । मूळियै री मा माय भाजी अर राख री बाल्टी लाय र सिणगारी पर ग्रंधा दीनी ।

राख सू भरिज्योडी सिणगारी छदरणं मुंडै गाळ काढ़ै । मूळियो लाठी रा धूतां सूं उण नै वारै काढ़ै । मैं ग्रान र लाठी पकड़ो अर कयो, "इया काइ मोथा पणो करै ! बापडी रै लाग जासी !" फेर भी बो नी मान्यो तो मैं लाठी छोत परै बगा दीनी ।

सिणगारी कंवै ही—देखल्यो, बाबू आ गया-गुजरचा का करतब ! वे गत विगाडी है मेरी ! वा खडी गाभा भाडै ही । माय ऊभी मूळियै री मा चिर-ळावै ही, "गत तो रांड विगाडी वे है, ग्रोजूं विगड सी । तनै भोत दिन हुयग्या सिर मे राग—रावडी राघती नै ?"

वारै मैतराण्यां भेळी हुयगी । ग्रव तेरा कै मेरा ! दोनूं बानी सूं कोजी-कोजी गाळचा वरसै लागी ।

माय ऊभा किरायेदार तमासो देखै हा । मैं माय ग्रायग्यो । कमरै मे ग्राय र गाभा पंरै लागो । म्हारो रूग-रूग खडचो हुयग्यो हो—सी सूं ।

जद मैं ग्रोफिस जावण लाग्यो तो मैतराण्या भेळी ऊभी सिणगारी वड-बडाटा करै ही--ई रांड री तो दुरगती करणी ही है !"

मैं गोजियै मे सूं हाथ काढतो बीरै कनै ग्राय र बोल्यो, "ग्रं लै थारा पीसा ! ग्रबार गरमा-गरमी हुयोडी है, सिझ्या बात करूंला । ग्रब तूं जा !"

उण रो ग्रपमान उण रै चैरै पर भाक्तो हो । मैं ग्रागै निसरग्यो । पण उण री बात म्हारै दीमाग सूं गयी कोनी । बर-बर बै उण रो चैरो म्हारी ग्राख्यां सामै ग्रावै हो ।... मूळियै री म लडोकडी है । ग्राये दिन बापडी सूं लडै । ...पीसा मागै तो, नी तो खुद देवै ग्रर नी किरायेदारो नै देवण दै । छेकड तो सिणगारी रै भी पेट है । वा भी मिनख है । .. उण रै भी टाबर है मूळियै री मा भी गरीब है ।.. दोनू गरीब !!! मूळियै री मा किराये सूं पेट भरै । मूळियो तो काम करै न काज, ग्रावरै साड री ज्यूं दिन भर ग्रठी उठी नै फिरतो फिरै ! सिणगारी सूं भी माडी हालत है भूळियै री मा री ! पण ग्रा बडो जात री है ग्रर सिणगारी—मगण । पूरै महीनै मैलो उठावै जद पगै हाथ माडै, तो मिलै काई ? दो रुपिया । ग्रर बै भी नही !!!

मूळियै री मा रो बुझ्योडो चैरो म्हारो ग्राख्या सामै ग्रायो ।....लळ लळ लुळती चामडो !...... म्हारै काना मे बीरी ऊची ग्रावाज सुणीजण लागगी—राड

गत तो विगाडी के है भोजूं बिगाडसूं ।....

श्रो काई तमासो है ? गरीब-गरीब नैं क्यूं खावै ? क्यूं सतावै वो आपो आप नैं ? चाणचूकं मनै ध्यान आवै—मार्क्स गरीब-गरीब री राड कोनी देखी रयात बात जणा ही उण रै ध्यान मे कोनी आई ? गरीब री फगत अेक जात है .. गरीब ! इण री जात क्यूं ? मार्क्स . गरीब ! गरीब मार्क्स !

आगै मोड माथै साईकिल लियां मनै अस्थानो मिलग्यो । वो कैयो—आव कामरेड, लारै बैठ !

मैं भाज र साईकल रै लारै बैठग्यो । पण करडी सीट रो दरद हुवै हो म्हारै । अस्थानो कैवै हो—आज प्रतिक्रियावादियां सूं सीधो मुकाबलो है । अै लोग आपा री बात रो विरोध करैला । स्साळा सरकारी टुकडा माथै पळै । ..

मैं सुणतो रयो । जद ओफिस आयगी तो मैं उतरग्यो अर अस्थानो भी । वो साईकल खडी कर र म्हारै साथै हुयग्यो । ओफिस मे आय र म्हे वासी रजिस्टर मे दसखत करया अर आगै निसरग्या । म्हारा ही साथी लोग बैठ्या हा आगै । सामै गदमैली पुराणी फाईलां पडी ही गरद चढयोडी ही पानां माथै । लागै ही जाणै कदे आनै कोई छेडी ही कोनी ।

म्हारै दीमाग मे अवै भी सिणगारी घूमै ही—राख सूं भरी । दिमाग मे दरद सो हुवण लागग्यो । अस्थानो कैवै हो—आवो कामरेड, यूनियन ओफिस चालां ।" मैं सागै हुयग्यो ।

ज्यूं ही म्हे ओफिस सूं बारै आया तो विरोधी यूनियन रा दो-च्यार जणा ऊभा मिल्या अस्थानो वानै देखर मुंह फुलायो तो, वा मे सूं अेक जणो बोल्यो, "क्यूं सुगन्ध भेळी कोनी गई दीखै !"

"सुगन्ध नहीं वदवोय कैयो । "अस्थानो बोल्यो । वदबोय री नाव सुणता ही वां मे सू अेक जणो बोल्यो—तेरो गेलो नाप, नही वदवोय श्रबार भेळी हुज्यावैली ।

"पंचायत भेळी हुमी । घबराजो मतना, टैम आवै है ।"

"टैम तो आयोडी है पण म्हे अेक र वरस रैया हा ।"

"जादा दादागीरी मे सार कोनी । अबार लडता बुरा लागोला । थे जावो !"

"जावां, के तेरै बाप री जमी है ! अेक मैलियो सो आदमी बोल्यो ।"

अस्थानो हाथ फटकारयो तो बीरै कनपटी माथै लागी । इतरै मे वो अस्थानै पर तीन-च्यार जणा अेकै साथै झपटया पण कई ओर लोग बीच मे आयग्या । विगडती बात बणगी ।

प्रस्थानो कंवे हो—सरकारी टुकड़ा खावणा आळा भी साढ ! म्रां रो इलाज है—सोट ! स्साळा प्रतिक्रियावादी । गद्दार !! मजदूर रा दुस-मण !!!....

म्हारै दिमाग रो दरद अब दूणो हुयग्यो। वो चटका मंवतो कंवे हो—मजदूर मजदूर सूं लड रैयो है।....गरीब सूं गरीब लड रैयो है ! मार्क्स कठै ऊभो है ? आदमी कठै ऊभो है ? मार्क्स अर मजदूर ! मार्क्स अर गरीब !! राड-प्रास री राड ! चिन्तन ! अधूरो है म्रो चिन्तन !

यूनियन ओफिस ! सामै काले मार्क्स री फोटू । काली दाढी सूं ढकी ज्योड़ै चैरै पर चमकती क्रान्तिकारी आख्या । मैं आख्या झुका लीनी । सामै वेरी साब कुरसी माथै बैठ्या हा । वा री आख्या मे अनुभव री तिरती चिन्ता मनै साव लखावै ही । चैरो झुरिया सूं लुळै हो । लिलाड पर मोकळी सळ । प्रस्थानो बूझ्यो— 'काई सोचो हो, कामरेड ?"

चिन्ता उतारण रा जतन करता वै बोल्या, सोचू हूं, मजदूर नै पैली मजदूर सूं, कर्मचारी नै पैली कर्मचारी सूं अर गरीब नै पैली गरीब सूं सलटणो पडसी लामी सास लेय र वै चुप हुयग्या ।

मनै लाग्यो, स्यात वै राव सूं भरीज्योडी सिणगारी नै देख लीनी है ।.... प्रस्थानै अर गैळियै री वात स्यात सुण लीनी है ....।

प्रस्थानो की कोनी बोल्यो । सुण र चुप हुयग्यो । चेरै पर सोचण रा भाव तिरै लागा ।

यूनियन ओफिस कार्यकर्तावां सूं भरीजै हो। लोग आ-आय र बैठता जावै हा । मैं ग्रेक कानी बैठ्यो सगळा रै मना रा भाव पढण री कुचेष्टा करै हो ।

वेरी साब री आवाज सूं अचाणचक म्हारो ध्यान टूट्यो । वै बोलै हा—डियर कामरेडस् ! आज आपा कमजोर हा, क्यूं कै आपा मे आपसरी मे राड है । आज कर्मचारी कर्मचारी सूं मात खावै, मजदूर मजदूर सूं मात खावै अर गरीब गरीब सूं मात खावै । सरकारी दमन री बात तो अळगी है, आज आपा रै सामनै इण ओफिस मे दो यूनियन है । फरक फगत विचारधारा रा है । काम ग्रेक है पण लडै । देखल्यो, कर्मचारी कर्मचारी सूं परतख लडै !........ सरकार नी चावै आपा ग्रेक हुवा ! आपा कीकर ग्रेक हुवा ? मैं मार्क्स नै बूझूं थानै बूझूं ! बतावो ? पेकै री झूठी अफवा मैं कीं नी राख्यो है । खानो नारै-बाजी सूं मजदूर भेळा हुया हुवै, ग्रंडी बात नी तो कदे देखी अर नी ही कदे सुणता मे आई । हां लडता जरूर है । मां नागै, दुनिया रो मिनख आदमी रो

सुभावव दळणै में सक्षय कोनी ।......कर्मचारी सरकार रै काम मे सेवी करै अर सरकार । 'बांटो अर राज करो' रो नीति रै तीखै हथियार सूं आपानै लड़ाया राखै । पण आपां समझां कठै ? आ समझ कद आसी, कियां, आसी, इणरो पडूतर ढूंढा तो आंख्यां आगै साव अंधारो आज्यावै !

हॉल मे बैठ्या सगळा कार्यकर्ता सुणै हा–बैरी साव रो खारो अनुभव । बेरी साव बोल्या–पण वै समझै कोनी ! अेक जणो बोल्यो, 'तो कामरेड आपां नै समझ लेणो चाहिजै कै........।"

कामरेड बेरी रा भवारा तणग्या । वै बीच में ही जोर सूं बोलण लाग्या–, तो कर्मचारिया नै प्रतिक्रियावादिया रै हाथा में सूंप र अेक पासै खड्या तमासो देखा ? व्यंग्य भर्‌यो डाग अर रो सवाल यूनियन ओफिस मे पडूतर खातर पसरग्यो । कामरेड अरयानो बोलै हा—कामरेड संघर्ष करो । गोड़ा नहीं टेकाला ॥

"संघर्ष पैलां खुद सूं करो नही नोकरशाही गाह देवैली आपा नै ।"

फेरूं वा ही मसाण जिसी सांती । बिडम्बना सगळा रै चैरा पर पसरगी । बेरसी आख्या माय सूं झाक ही । कामरेड बेरी भळै बोल्या—अेक रास्तो है !"

"वो कांई ?" कई मूंडा साथै ही खुल्या ।

"सुणो !" फेर चुप्पी । कामरेड बेरी बोल्या, "कर्मचारिया नै प्रतिक्रियावादिया रै खिलाफ जिहाद करणो सिखावणो पड़ैला । पैलां आनै आडा नाखो । फर संघर्ष करो । अेक-अेक कर्मचारी सूं जोड़ो । कर्मचारी री बात बारै हिरदै ताईं पुगावो ।

कामरेड लिखमी बोल्यो, "पण यांरा सगा सबधी भाई–मायला तो सागै रवैला ही, कामरेड ।"

"वानै सबधा रो सावी अरथ बतावो । वै ऑफिस मे पैला कर्मचारी है अर पछै और कीं ।"

लिखमी चुप हुयग्यो ।

मनै दीखै 'बेरी साव रै प्रस्ताव मे भर्‌योडो ताव अर कमजोरी री निसाणी । मैं सोचूं कै आदमी लोभ नै कदे छोड देसी ! मैं बोल्यो, "कामरेड आदमी लालच सूं घिर मेल्यो है । ओ लालच पीसा रो ही नी अपणायत रो भी है ! आदमी रै मांय लरडियो ल्हुक्यो बैठ्यो है कामरेड ! वो हालताईं जगा कठै छोडी ? साथै ही लरडिया जलमै भी है कामरेड वानै, इन्सानियत रो पाठ पढावणो ओखो है ।'

"मतवादां री बात छोडो कामरेड चौहाण ! अल्पमत नै इतरो कमजोर कर दयो कै मोको पड़्या आपा उणनै नागा कर सकां । फेरूं लड़ाई सरू करी जावै ।"

यूनियन ग्रोफिस में बैठ्यै सगळा कार्यकर्तावां रै आ बात जचगी। चिन्तनशील चैरा चमकण लागग्या । सै उठग्या अर मैं भी ।

लड़ाई आज भी है । आज भी सिणगारी मूळियै री मा रै हायां राख मे मरीज्योड़ी ऊभी है । आदमी रै डील पर घास उग्याई है । घरां मे बैठ्या लोग परेसान है पण बोलै कोनी । मनै मिनख रो उणियारो मैलो दीखै ।

मैं घर बदल लीन्यो—सा'रै ही । के करतो ! गदगी सूं जिन्दगाणी मे सड़ांध भरण लागगी ही ।

□

ब्याज अर बट्टो

आर-पार होटल रै सामै पड़्यै बेंच माथै बैठ्यो मैं चाय रै कोप नैं उडीकूं। स्टोव री कोजी आवाज सूं सिर दूखै लागो म्हारो। म्हारै मुंडै सू निसर्‌यो-जल्दी कर भई !

चीड रै फाटकडा माथै मूंदा मार्‌योडा गदमैला गिलास। काठ री पेटी रै सामै ऊभो होटल आळो। वीरै आर बार ऊभा च्यार-पाच जणा। स्यात वै भी चाय री बाट उडीकता हुसी।

स्टोव री आवाज धीमी पडी। होटल आळो चाय छाणै लागो।

सडक माथै आगै जुलस। आवाज सुणीजै। जीत गया भई जीत गया—रामचन्दर जीत गया ! रोळो ! म्हारै काना मे दरद हुवै लागो। इतरै मे होटल आळो आयर बोल्या-ल्यो साब ! माफी चावूं थोडी ताळ लगगी।

मैं कप झाल लीन्यो। वो चल्यो गयो। अेक घूंट लेयी, फेरूं ध्यान जुलस कानी चल्यो गयो। जुलस अब नेडै आयग्यो हो। ठाडो भीड हा। हाथा मे बास री तिसळणी लाठ्या ! मैं सोच्यो, जीत मे लाठ्या कीकर ? स्यात लडाई रा आसार दीखता हुसी।........म्हारा विचार बासा सूं टकराय र टूटग्या। इतरै मे जीप मे ऊभो रामचन्दर आयो। फूल माळावा सूं लद्योडो रामचन्दर' ! मनै लाग्यो, जाणै व्यवस्था माथै विजै हासल कर परो आयो है...। इणी वास्ते वीरा भायला खुसी मनाता हुसी।...

जुलस मेरो आख्यां आगोकर आगै निसरग्यो।

चाणचूकै मेरो ध्यान टूट्यो। होटल आळै रो नौकर राधियो टूट्योडा कोप हाथा मे लिया कंवै सेठजी, "जुलस मे कोई धक्को दे दीन्यो" वो गोडा आगीनै करतो बोल्यो, "देखो, गोडा फूटग्या ...गिलास भी फूटग्या....सेठजी।

मैं देख्यो, वींरै टकणा पर लागी ही। लोही चिलचयायो हा। राधियो पग नै अधपर करयां खड्यो हो।

होटल आळो स्टोव छोड र वींरै कनै आयो पर म्हारै देखतां-देखतां ही

राधियै रा बाळ पकड लीन्या अर झापट जडतो बोल्यो, "तनै दीसै कोनी हो ? म्हारया फूट्योडी ही ??.......

राधियो कनपटी हाथा सूं ढक्या ऊभो हो। बीनै डर लागै हो, कठै दूसरी चनपट नीं पड जावै। राधियै री चनपट रो म्हारै दरद हुयो। होटलम्राळो राधियै रै देयी किया ? मारणै रो बीनै काई अधिकार है ?"""नौकरी करणै रो मतलब ओ तो कोनी हुवै के मालिक मारै, खाल मरोड़ै ।....मेरी म्हारया सामै दसेक साल रो राधियो रोवै हो । मैं उठ्यो । होटल म्राळै रै कनै म्रायो । अर बोल्यो, "सेठ, तूं ई छोरै नै क्यूं मार्‌यो भई ?

"बाबू म्रापनै ठाह कोनी, वो चाय री भगोनो उठाय उफाण दावतो म्राल्यो, म्रो....दो रूपिया रा कोप फोड लायो ।"

"तो के मारणै सूं कोप पाछा म्रायग्या ?"

"पाछा तो बाबू फूटतापाण ही म्रायग्या हा, झापट तो दूकान सूं म्रठै ताई लावण रो ब्याज है !"

"काई मतलब ?"

"रोजीना इया कोप फूटता रैया तो म्हे होटल म्राळा तो खा लिया कमाय र ! बजार मे म्रो रूल है, जे नौकर छोरो कोई कोप फोड लावै तो फूट्योड़ै कोप री कीमत उणरी तनखा मे सूं काटो ।" म्हारै विचार म्रायो राधियो म्राज बेगार काढसी । बीरै पग रै लाग मेली है, जे फेरू पड्यो तो बिचारै री काल री मजूरी म्रौर चली जावैली । . ....

होटल म्राळो म्रापरै काम मे लागग्यो । बात बीरी म्रखखडता सूं टकरायोज र टूटगी । राधियै रै भाव तो बात म्राई-गई हुयगी ही । मैं कैयो—"म्रेक चाय म्रौर दे ।" होटल म्राळो केतली मे सूं चाय रो कोप भर परो देय दीन्यो मनै । मैं पीवै लागो-गम ।

म्रार—पार नै लारै छोड र मैं सडक—सडक चालूं । राधियै रो फाट्योडो हाफ पैंट म्हारी म्राख्या माय तिरै । फाट्योडो कमीज म्राख्यां रै चिपै । मैं उतारूं । होटल म्राळो म्हारै काना मे गूंजै लागो—बाबू म्रो तो दूकान सूं म्रठै ताईं लावणै रो ब्याज है ""कोप तो टूटवा ही नुवा म्रायग्या... म्रो रूल है ।"""""

मैं म्रागै भिडतो-भिडतो बध्यो । मेरी म्राख्या सामै राधियै री मा म्रेक म्रानी ऊभी कैवै ही—,"श्याम बाबू, इयां किया चालो हो ! सरधा कोनी ?

मैं छुटतो ही बोल्यो— 'ना ।"

"तो काई सोच रैया हा ?"

"थारै राधियै री बात।"

"काई बात हुयगी, बाबू!" उतावळो पण बीरै बेरै पर आयो।

था ही के चेतो वाको आज सिर पर कोनी जणा आज छोरै री गत खराब हुवै।... छोरो होटल पर दुख पावै।

वा सांस लेयर बोली, "श्याम बाबू, मैं लुगाई री जात काई करू! ऊन रा काटा काढर जिन्दगानी रै चुभोवू–म्हारी जिन्दगानी रै। कांटा ही कांटो बिखर मेल्या है आसवाडै पासवाडै! दरद सू कीकर रुको जावै, था ही बतावो मजबूरी म छोरै नै भेजणो पडै।" वा सास लियो अर फेर बोली, "होटल-आळो कुनमी है, बाबू।

'कीकर?" म्हारै मूडै सू निसर्यो।

"महीनै मे आधी तनखा देवै। अर आधी साहू कह देवै–कोच फोड दीन्या।'

होटल आळै रो ब्याज म्हारी आंख्या सामी नाचै लागो। राधियो कनपटी पर हाथ दिया म्हारी आख्या पाय ऊभो हो। राधियै री मा कैवै ही "काल सू छोरै नै मारै घोर रामो! काल ही गाल लाल कर दीन्या! आयण रा आयो तो रोवै लागो मा काल सू मैं होटल पर नही जावू ला...पण मैं जी मोस र वोनै भेज्या। काई करू? घर रो आगो कोनी चालै। च्यार टाबर, अर मैं अेकली! वा पेरू सास लियो अर बोली," 'बाबू आज महीनो हुयां आठ दिन दिन हुयग्या पण पीसा कोनी दिया, तावण नै जावू। ...

मजबूरी तळै राधियै री मा र नै दाव परी वा आगै निसरगी। मजबूर राधियै री मा नै आख्या म लिया मैं च तु।

चाण चूकै आगै सू लाठ्या रो आवाज सुणीजै। मैं देखू, पुलीस आळा बीच बचाव करै। रामचन्दर मेरी आख्या सामै पीटीज रैयो है। हीरसिंह री गोठी सुणीजै हार रो ब्याज समेत बदलो लेवू ला।

रामचन्दर नै पुलीस आळा पकड र लेयग्या। भीड खीडगी। मैं सडक पार कर सामनै खड्यै नदू कनै आयो अर पूछ्यो –नदू काई बात हुयगी ?' "ठाडै रा डोरो डाग फाडै, श्यामजी। हीरसिंह चुनाव म बेलन पेरर फडवा दीन्या फेर भी रामचन्दर जीतग्यो। पण बीनै आपरी हार बरदास्त कोनी हुयी। मामलो पहुच आळो है, सास लेयर नदू बोल्यो, 'सरव ईवल आॅफ दी फिरेस्ट' नाच रैयो है। छोटो बडै नै आख्या पाखो को सुहावै नी!

आदमी री आदिम सभ्य मेरी आख्यां मे आयग्यो। नदू कैवै हो–श्यामजी

ग्रादमी री जीवणो ग्रोखो है । सरीफ लोग बदमासां सूं ग्राखता हुयोड़ा जीवै । लागै, धरती पर कदे खून-खच्चर हुसी ।

"पण हुसी कद, नदू ?"

की सोचतो वो बोल्यो—"थावस राखो ।"

'सबर री भी सींव हुवै, नदू !

"पण ग्रादमी नै ग्रा लागै जद नी । सै ग्रादमी इण बात नै समझै जद पार पड़ै । ग्रापा रै ग्रेकला री कांई उठै !"

नदू री बोली मे भी राधियै री मा रा हीण सुर सुण र मैं बोल्यो, "नदू सगळा मिनख मजबूर है, वै मजबूरी लियां ही जीवता रैवैला ? मनै लागै, मजबूरी उतारणै री कठै भी कोसीस कोनी ग्रा कोसीस हुवणी चायै !

ग्राप ठीक कैवो, श्याम बाबू ! पण थावस राखो, पकायत हुवैली!..

नदू चल्यो गयो ।

म्हारी ग्रांख्यां मे राधियै रै हाथ में फूटयोड़ा कोप । वो रोय रैयो है । होटळ ग्राळो जाणै मार रैयो है बीनै ..राधियै री मा मजबूर ! रामचन्दर . हीरसिंह ..ग्रर नदू ! मजबूरी !!!

मैं पैंट री जेब सूं बीडी काढ र सिलगा लेवूं ग्रर जबाड़ा सूं सूंट सार-सार पीवण लाग जावूं-धूं वो, ग्रर धुं वो !

□□

छगजी रो बेटो

—"बाबा—बाबा, परमा भाई जी नै इनाम मिल्यो है। श्रो देखो छापो। वारी फोटू ! पूरा श्रेक लाख रो इनाम मिल्यो है। मुह मीठो करावोला नी।"

—"जरूर करावूला पण मनै श्रा तो सुणा कै श्रो किण बावत मिल्यो है।"

—"भाई जी वैज्ञानिक है नी, विज्ञान पर ई मिल्यो है।"

—"श्राछ्या ! काई खोज करी है रे !"

—"परम विनासकारी परमाणु सगती रै नुवै विध्वसात्मक प्रयोग साह मिल्यो है, वो छगजी रै चेरै कानी देख्यो श्रर बोल्यो—पण थे उदास कीकर हुयग्या, बाबा !"

—तू जा।

—मिठाई नी देवोला बाबा।

—नहीं दिवाळी श्रावैली न, जणा देवूला।

भोळा श्रागै की नी बोल्यो। वो जाणै हो कै जादा बाता बावा नै श्राछी नी लागै। वो छगजी री बात नै समझ्या, ना समझ्या चल्यो गयो।

□ □

श्रा वा ई नीमडी है जठै छगजी रा बेटो बैठ र पढतो। इण री छाया बी नै भोत श्राछी लागती। वो इण री छाया मे तळै बोरी बिछाय र पढतो। इण नीमडी नै उण बखत श्रो कठै ठाह हो कै श्रो लाडलो श्रागै जाय र इतरो बडो श्रादमी बणैलो। फेर भी श्राज नीमडी उदास है—ससारो रै मिनख री तरिया। उणरा पत्ता भी सू मुडग्या है। पिलास छायग्यो है—छगजी री उदासी री तरियां। वा सोचै, वो श्रासी मेरी छाया मे श्राय र पढसी। सोच सी तद म्हारी काया पलटैली। छगजी भी श्रा ई सोचै—परमा नै 'घरा' कानी बावडणो चाहिजै। उदास चित छगजी श्रर नीमडी दोनुवा रो दरद श्रेक है। छगजी रो वो बेटो है, नीमडी बी पर छाया करी है।

परमानन्द बरोबर घरा पीसा भेजतो। जद कोई कागद श्रावतो तो वास–

पळियँ रा लोग बूझ लेवता—परमैं रो 'डरापट' आयो हुसी... वडो सुपातर बेटो है ...भोळो कँवै हो कँ दो हजार सूं कम रो नो भाई जी कदे ड्राफ्ट भेजै ई नीं... छगजी इण पर कँवता—पण म्हानैं कठै इतरा पीसा री जरूरत, दो-च्यार सौ भोत। म्हानैं आ पीसा री जरूरत नी है।

फेर छगजी सू कोई आगै बहस नी करता। वँ वा रो सुभाव जाणता कै अब आगै बोल्या कै वा नैं झाळ आयी।

आज परमानन्द रो कागद आयो हो। छगजी खोल्यो। पढ्या अर पाछो लिफाफे मे घाल दियो। वा रै चेरै पर वडी-वडी विचार रेखावां उघड आयी ही। स्यात वँ इण कागद नैं बाच र राजी नीं हुया। लिख्यो हो—आप छापा मे भी पढ्या हुसी। आपरै आसिरवाद सू मनैं 'देस रो सबसूं वडो वैज्ञानिक पुरस्कार मिल्यो है। विस्वकरमा री किरपा है आ ..

छगजी री नाड हाली ही—ना—ना आ विस्वक्करमा री किरपा नी है। विस्वक्करमा विनास नी चावै। हा . पण . विनास तो प्रकृति रो सुभाव है....... परमो परमाणु सगती पर नुवीं खोज कर र 'देस' रो मान वधायो है।...नी—नी .. ओ मान झूठो है . ससारो रै आदमी रो अपमान है।....उणरी मौत रो अभियान है .... ओ अभियान .. रोक देवणो चाहिजै।.... परमो इया नही करैलो।

नीमडी रा पत्ता कदे हालता कदे सायत, छगजी रै दीमाग मे उतार-चढाव री तरिया। अब वा थिर हुयगी ही।



छगजी रो कागद परमानन्द नैं मिल्यो तो वो वडी दोगा चित्ती मे पड-ग्यो।

प्रिय मुन्ना,

थारै पुरस्कार री बात मनैं सब सू पैला भोळो आय र वताई, जिको तनैं कैया करै—काका, मनै इसी नोकरी दिरावो जिण सू म्हारो पेट भर जावै अर दुनिया री आतमा नी दूखै। स्यात तूं उण री बात रै मरम नैं पिछाणयो हुसी .. तू बीनै कदे डरायो कोनी, इण वास्तै म्हानैं स्यात' सब्द नैं काम मे ल्यावणो पड्यो है। तू म्हारी बात रो दोरो मतना मानजे।

हा, नी जाणैं क्यू खवर सुणता ई उदासी आय र मनैं घेर लीन्यो .. . हा 'सरव विनासक' भाळा रै मुडै सू निसरयो सब्द मनैं उथल-पुथल कर दीन्यो।

आदमी नैं दरखत री तरिया हुवणो चाहिजै। वडो हुवै, फूलै अर झुकवै। फळ देवै। इसो फळ नी कै आदमी सारू सरव विनासकारी हुवै साची बूझै तो

आ नीमडी भी उदास है। जग रो भेख देख र वा पीळी पडगी है। स्यात वा भी तनै की लिखणो चावै। मैं उण री भाषा नै की-की मैसूस करूं। स्यात वा कैवणी चावै—मुन्ना, मैं थारै पर छाया करी अर तूं ? तूं थारी छाया अठै नी पडबा देवैलो अर नी म्हारी। फेर आ धरती !....ओ रो वो...थारी जात खतम हुय जासी अर म्हारी भी। मनै सिकायत है थारै सूं। तू वैज्ञानिक है। सै की समझण आळो अर मैं ! अेक रूंख ! तू जीव री बात पर विचार कर मुन्ना। धरती पर जिन्दगानी री बात कर नही अै आखी चीजां थे वैज्ञानिक बणाई हो, सैमूळ खतम हुय जावैलो, अर ओ ग्यान भी। विनास लीला री बू मनै थारै दीमाग सूं आवै, मुन्ना। तू न तो म्हानै रैवा देसी अर न ई अपणै-आपनै। तू आज्या। अठै गाव मे कोई कारोबार खातलै सो भोळो भी बोलबालो हुय जावै। ओ कैवै। मैं सुणूं। तनै आगै बढावण मे म्हारो भी की है। म्हारी काया विछाय र मैं थारै दीमाग नै तरोत'जा राख्यो है। अर अब भी मैं तनै ताजगी सूं परै नी देखणो चावूं। अब देखलै ! अेक कानी तू है, दूजी कानी पूरी सिस्टी।

तू इण नीमडी री बात नै समझजे, मुन्ना।

थारो बापू

छगजी।

परमानन्द इण ओळियै नै आपरी जेब मे घाल लियो। जेब मे पड्यो कागद वीरै दीमाग मे कई-कई बर उथल-पुथल मचाई, कई बर धरती धूजी। जमी धसी, दरारा पडी। पण अब उण रै चेरै पर ताजगी है।

□ □

भोळो भाग्यो भाग्यो आयो अर खुसी मे भरयो दनादन बोलणो सरू कर दियो—बाबा-बाबा, भाई जी गाव आय रैया है। अब तो भोत मजा आसी। नीमडी सामी खडयो हुय र बोल्यो—अरै, अय क्यूं उदास हुय मेती है ! हास ! देख तेरो मुन्नो आय रैयो है ! थारी छिया मे बैठैलो—थारी गोदी मे। सुणताई नीमडी रा पान खडखडाया अर पीळा पत्ता झड र पडया जाणै, हासी रै मारै 'पेट रा फूल' झड र पडया हुवै। वो बाबा रै सामी नोन्नो ताळ उछाळतो कैवै हो—बाबा, परमा भाई जी बी अेक लाख रै इनाम नै दुसराय दियो। नही लियो। ओ देखो अखबार ! लिख्यो है—वो पिछतायो करसी—जीव रै सार्य इण अपराध सारु। ओ देखो ओ अखबार ! लिख्यो है—परमानन्द परमानन्द नै विछ ग्यो। वैज्ञानिका मे हळचळ ! ओ देखो ओ अखबार ! लिख्यो है—वैज्ञानिका रो मारयो सुणो....।

– अच्छ्या भोळा !”

—“हां, बाबा !"

—ग्राव । म्हारै साथै चाल तनै धाप र मिठाई खुवावूं'ला। ग्राज ई दिवाळी है, भोळा ।

छगजो बारै ग्राया तो सहर सूं ग्रायोड़ा बडा-बडा लोग वानैं घेर लिया।

भोळो ऊभो खुसी सूं भरयोड़ी ग्राख्या सूं वांनैं सूं देखै हो ।

□ □

नांगल्

बारणो-बारणो देखती थकी वा सोना रै घरा मुडागै आयर ऊभी हुयगी-म्रोऽऽ बाईजी ! वा सागी आवाज जिकी वा बारणैं—बारणै देती आवै ही। रोजीना आ ई आ आवाज देवणैं सूं उणरी बोली मे लय अर लय मे करूणा रळ-मिलगी ही। सुणण आळो समझ जावतो कै बारै कोई मागण आळी ऊभी है।

सोना आज छुट्टी ली ही। बीरा सासू-सुसरा आवण आळा हा। आवाज सुण परी वा बारै आयी, बोली—काई चाहिजै ?

आ ई कोई आटो, बोदा-पुराणा गाभा ...छोरै नै सी लागै कोई पुराणी सूटर . बाई सा।

सोना बीरै चेहरै मार्थ निजर्‌या गेरी—जोबन रो उजास अजेस ई बीरै चेरै पर बाकी हो। वा कैयो—थै तू बीं मजदूरण सू भी गई-गुजरी है ! घर-घर मागणैं सू आछ्‌यो है कमा अर पगा पर खडी हुव। म्हे भी तो कमावा हा।

"बाईसा मागणा तो म्हारो जमारो है !"

"ना, की पळ थम परी वा बोली, थानै मागणो बुरो नी लागै"

"ठाह नी बाईसा। छोट थका ई म्हारा मा-बाप मागण नै निसर्‌या, उतरा छोटा म्हे"

"सुभाव हुयग्यो है था लोगा रो"

"हा बाईसा"

"खैर, मा-बाप भिखारी हा तो थे बेटा-बेटी भी भिखारी ई हुवै ! के तू थारै ई चाद रै टुकडै सै बेटै नै भी भिखारी बणावैली ?"

"तो काई करूली, बाईसा। इण सू अे'क बडो है वो माग परो र आपरो पेट भरै। की आटो घरा ले आवै"

"कित्तोक बडो है ?"

"ओ ई कोई च्यार-पाच साल रो"

"तनै बीनै मांगतै नै देखर बुरो नी लागै ?"

"नहीं, बाईसा !"

"तूं थीनै मांगवा नै भेजे तो थारै मन रै लागै नी ?,

"ना बाईसा।"

"थे आदमी नी हो।"

"म्हे भिखारी हां, कालबेलिया हां, बाईसा"

"थारै आतमा है ?"

"है ई बाईसा।"

"फेर आ दुर्ग नी ?

"बाईसा, मांगणो तो म्हारो जमारो वा फेरूं आपरी बात गाई अर कैयो, फेर सं नैं ई सुणणी पड़ै बाईसा। मजूरी करण नैं जावै तो मालक कह देवै— इयां के चालै है, वेगा पग उठा, जे इयां ई काम करणो है तो काल मतना आजे.. कारीगर दकाल देवै ...नौकरी करा तो मालिक री भी दस सुणणी पड़ै ..ओ किया कर दीन्यो ..थारो मायो खराब है . तू बेवकूफ है...बाईसा ओफिसा मे भी साब फटकार सुणा देवै, दकाल देवै ...कागज बगां देवै। मैं तो अठै अेक ओफिस मे देखी आप जिकी अेक साब पर अेक साब कागजा रो पुलन्दो बगा दीन्यो—जिया मजूरण सैवै बिया ई म्हे सैंवा, जिया आप लोग सैवो बिया ई म्हे सैंवा, सै पेट खातर सैंवे, बाईसा।"

सोना बी भिखारण री बात मे आदमी री विवसता देखी अर कैयो— "थे इण तरिया सोच र अपनै आप नैं खराब मतना करो। मांगणो भोत बुरा है। मजूरी रा दस रुपिया भी भोत चोखा है। तूं चावैं तो मैं तनैं कोई काम दिरा देवूं।"

"काई काम ?"

"बरतण आद साफ करणो"

"बी सूं तो म्हारो ओ ई काम आछ्यो है"

"मागणो काम है ???"

"म्हे मगता-भिखारी तो इणनैं काम ई माना, बाईसा"

सोना समझगी कै मगजपच्ची मे सार नी है। इणनैं चून घालो अर आगै जाबा द्यो। वा माय जाय र चून ल्याई अर बीरैं कटोरै मे घाल दियो। वा लेयर आगै चलीगी।

□□

भोत दिन बीतग्या। अेक दिन वा मागण आळी फेर आयी आज वा आवाज नी देयी, बारणो ई खड़खड़ायो हो। सोना बारैं देखी। देख परी वा माय रसोई मे गई अर चून री बाटकी लेय परी बारैं आयर बोली—"तूं तावळ कर मनैं भोत काम है !" जद हाथ आगै नी पसर्या तो वा बोली-अरैं ! आज थारो कटोरो कठै है ? तूं मागवा नै नी आयी !!! मैं तो थारै खातर चूण ल्याई हूं !"

"नहीं, बाईसा। इया ई आप सूं मिलबा नै आयी हूं।"

"काई चाहिजै ? पीसा !"

'नही।"

"तो किया।"

सोना बीं कोनी देख्या जावै ही वा बोली—"अवार तो आपरै काम है, पछै आवू ली।"

"नही-नही, तूं आ।" वा आडो खोल दियो। वा मांय आयगी। सोना बोली "बैठ ! काई बात है ? छोरो तो ठीक है।"

"सै ठीक है, बाईसा।"

"फेर ?"

"इया है बाईसा, बी दिन आप जिकी बाता बतायी ही न, मैं म्हारै छोरै रै बाप नै कैयी। मैं कैयी—लुगाया काम करै, मैं काम करूं तो काई। थे मनै क्यू मागवा दयो ..."

"तो काई कैयो बा !"

"वा इज जिको बी दिन मैं आपनै कैयी। पण ,जद मैं टाबरा री बात कैयी तो वो चिनेक सोच्यो।"

"काई ?"

"कै नान्हा सा टाबरा नै मांगण नै भेज देवा, वै ठंडी-बासी रोटी साग र पेट भर आवै अर अेक बाटकी चून आपणैं ताणी ले आवै, वै इणी सारू थो जलम लियो है आपणो वेटो वण्यो है।....के बाप री काम ओ इज है....मा रो काम ओ इज है....तो बीरै बात जची।"

"फेर काई हुयो ?"

"अबै वो मागवा नै नीं जावै।"

"अर तूं ?"

"मैं भी नी जावूं।"

"तो तूं नी मागै !!! वा बाटकी कानी देखी अर कैयो—भोत आछ्यो काम करचो तूं। काई नाव है थारो ?"

"सोना।"

"सोना ! हा, ओ ही नाव म्हारो है !"

"सच्च, बीवोजी !"

—"हा तू भोत आछ्यो काम करचो है। सोना, मागणो भोत बुरो है। ओ काम नीं है, सोना। ओ तो मागणो है तू तो भोत जोरदार सुगाई है

आ बता तू करै काई ?"

—'बीवीजी, लुगाया रै सिणगार री चीजा छोरै रो बाप लायर दे देवै। मैं आस-पास रै गावा म अनाज रै साटै कै इया वेच आवू ।"

—'आच्छ्या ! अरै वाह ! भोत आछ्यो काम है ओ तो। पण गाव आळा देख र तनै अचूमा नी करै ?"

—बीबीजी पैलै दिन तो लोग भोत हेप करयो लुगायां भी कैयो—आ थारै विया जची ! तू तो चून भाग्या करै ही न। म थारो नाव लियो। कैयो, 'अेक बीबीजी मनै समझायी। वै सीख देयी। इण तरिया मै मागणो छोड दियो। अब म्हे दोनू जणा कमावा। म्हे जोहड़ै म ठाव वणा लिया है बीवीजी अेक ढालियो उठै सू ई माटी खोद काची ईटा वणा र लहयो कर लियो। अेक झूपडी बणा र खुड्डी (रसाई) त्यार कर लीनी। टाबरा नै स्कूल मे घाल दिया है।

अरै भोत आछ्यो सोना। तू भोत चोखो काम करयो है। मैं थारै दोनू टाबरा नै वजीफो देवू नी। जदताई वै पढैला थारै गाभां अर पोथ्या रा पीसा मैं देवूली आज सू वै दोनू म्हारै गोद है।

"बीवीजी आप भोत आछी हो !"

'सोना तू कमाल कर दियो। काई कैवू तनै। तू भोत वडो काम करयो है।"

वीबीजी म्हारै लोगां रै मोकळा टाबर हुवै। वस म्हारै दो टाबर है। अब ओर नी हुवैला कैय र वा मुळकी अर वोली—आ सू ई म्हे वदलस्या !'

'अरै तू तो भोत समझ री बात कैवै सोना। तू अै वाता कठै सू सीखी !"

बीबीजी थे ई तो बताई। जे म्हे मागवो छोडयो तो अै सै वाता मैमूसवो, सोचवो भी सरू कर दियो। मैं थारै कनै भोत पैला आवणो चावै ही पण मैं सोची कै पैला मैं म्हारो घर वणा लेवू फेर बीबीजी नै बुलावूली जिका म्हानै मिनख बणणै री प्रेरणा देयी। आज तो मैं आपनै लेवा आयी हू। आप अर साव दोनू आवो म्हारै घरां। आज नागळ (गृह प्रवेश) है। मिनखा मे मिलणो है बीवीजी। आप आवोली न ?"

अरै सोना म्हे पक्कायत आवाला ! तू मनै भोत आछी लागै।

मैं आप तोडी कुरस्यां भी ल्याई हू, बीवीजी। म्हारा पाच परवार है म्हारी सोभा हावैली न !

"अरे सोना वाह ! तूं आज मनै के-के बतासी !"

"आप जरूर आज्यो नाळै रै पार जोहड़ो है नी, उठै म्हारा ई घर है"

सोना रो धणी रवि घरां आयो तो सोना वी गरीब सोना री बाता वी नै बताई। रवि बोल्यो—तूं के बात करै है, मैं लोग के वेरो के करै मैं नीं जावूंला फेर तूं म्हारी पोजीसन भी तो देख ! ..

'मैं जाणूं हूं कै आप जिलै रा वडा अधिकारी हो पण आपनै सोना रै घरां चालणो पड़सी आ थारी पत्नी रा आत्मिक इच्छा है ...रवि, जे आपा नी गया तो काई ठाह उणरो दीमाग झटका खा ज्यावै अर वै लोग फेरूं बी ई गेलै आयर पाछा ऊभा हुज्यावै।

आछ्यो भई, मैं चालूंला, बस ! चाल चाय प्या !

रवि फंस हुया। सोना बडी उमग रै साथै सजै-धजै ही, जाणै वा कोई भोत वडै जळसै मे जावती हुवै। रवि नै ओ सा अटपटो सो लागै हो पण वो सोना री आतमा नै नी दुखाणो चावै हो। वो बोल्यो—लै वगत हुवग्यो !

"अबार ई आयी, बस !"

सोना भोत खुस हो। ज्यूं ई वींरी गाडी नाळै रै साकड़ी आयी तो वा बोली-इणी रै परलै कानी गरीब सोना आपरो मजदूर महल बणायो है, रवि मैं भात राजी हूं।

रवि बस 'हूं' कैयो। वो गाडी ड्राईव करतो चाल रैयो हो। नाळै नै पार कर परी गाडी ज्यूं ई आगै आयी तो दूर थाई ओड़ी लुगई-मोट्यार ऊभा हा। नगर विकास प्राधिकरण करमचारी विध्वस मचारैया हा

सोना रो देखर काळजो वैठग्यो रवि बोल्यो-प्राधिकरण आळा ओ काई कर रैया है, सोना !

"आप गाडी खाहली चलावो।"

सरपट भागती गाडी रा बरेक सोना रै घरा रै सामी आयर लाग्या। सोना गाडी रो गेट खोलर झट बारै आयी सामी खड करमचारिया नै देख र बोली—आप कुण हो !

'नगर विकास प्राधिकरण रा कर्मचारी !"

'आदेस लेयर आया हो ?

"हा, पण आप कुण हो ?"

"मैं कैवूं, आदेस दिखावो !"

"नीं दिख.वा"

सोना आदम्या अर लुगाया नै इसारो कर्‌यो—आं सै नै पकड़ल्यो जावण

मतना द्यो—म्हे अबार ई पुलीस लेयर आया ।

सोना बिलखं ही—"बीबीजी अब म्हे के करस्या !" तूं घबरावं मतना आं लोगा नै हरजानो भरणो पडं'ला । बिना किणी आदेस रै अ' गरीब लोगां री छियां ढाह नाखं-आनै मैं सबक सिखावूं'ली"

सोना री आरया मे उणरी गरीब सहेली री उजड्योडो गरीब महल तिरै हो । वा प्राधिकरण री गाडी रै बनै आयी अर कंयो—सोना, देखं के है ! इणरै च्यारू पैडा री हवा काढ दे । देखस्या ! अ' आगमी किया ? वा सोना च्यारूं पईया रिता दिया प्राधिकरण रा नोकर देखता रा देखता रैयग्या । उठीनै नोजु-वान वांरै बाथेडा करणा सरू कर दिन्या ।

रवि कार सूं बारै निसर्यो वा लोगा रै कनै आयर बोल्यो—ओ काई कर रेया हो आप ! सै परै हुज्यावो ! छोड द्यो आनै ! अेक करमचारो रै कनै आयर वो बोल्यो—काई नाव है ?

"जी !"

"काई पोस्ट है आपरी ?"

"जोss !"

"सै झूंपड़ा गिरा दिया ! आवो म्हारै साथै चालो थारो सामान भी लिआवो !"

वै च्यार आदमी हा रवि वानै कार मे विठा लिया अर सोना नै कैयो—"आप अठै ई रैज्यो मैं आनै छोड आवूं आखिर तो अ' सरकारी करमचारी है !

"अजी साब आपतो देवता हो ।" वै अेकै साथै बोल्या

'आदेस लेयर आयो हो ?"

"नही साब !"

दूजो बोल्यो—मैं नट्यो हो, साब डरा-धमका द्यो तोडा-फोडी मता करो मिलं सो लेल्यो पण अ' मान्या ई कोनी !"

"चालो कोई वात नी ।"

ज्यूं ई रवि री कार थाणै माय बडी तो वै भोचक्का रैयग्या बोल्या-ओ काई करो हो साब !!

"गरीबां रा घर ढाह नाखो जिका नांगळ री त्यारी कर रया हुवै अर थारै साथै ओ भी नी हुवै !!! गाडी रोकर वै कोटवाळ नै कंयो—आंनै 'अरेस्ट' करल्यो, माई सेल्फ रवि प्रकास एम. डी. एम. (इस्ट) अ' लोग गरीब लोगा नै बरबाद कर दिन्या है बिना कोई वजै वां रा घर ढाह नाख्या है गाडी मे आंरो सामान है वो भी कब्जे करल्यो"

"ओ बालको कठै हुयो, हुकम !"

"थाओ म्हारै सागै चालो।"

कोटवाल सिपायां नैं थानैं बन्द कर देणै री हुकम देयर रवि री गाडी मांय बैठग्यो जद वै उठै पूग्या तो रोवा-धूरी मांय मेल्यो हो नगर विकास प्राधिकरण री पिचक्योडी गाडी ढह्योडा ठावा रैं सामी ऊभी ही। गरीब सोना रा न्हा-नान्हा टाबर थांनैं थपलक जोवै हा। रैं री आंख्यां मेंब दूजै री आंख्यां मे अबूझ विध्वस री वात देखै ही। सोना री आंख्यां गीली हुयगी।

□□□

अगार बा'रा बज्या हा।

वो फावडा-परात अेक कानी मेल दियां। बारै, खिडकी रै गमछै म लिप-टयोडी रोटया पडी ही। बानै हाथ म लेयर वो बारै आयग्यो। कनै ई अेक कुवाटर हो जिए माय आदमी रैवै हा। लॉन मे अेक आदमी कुरसी पर माथै रै हाथ लगाया सोच री मुद्रा मे बैठया हो। कनै आयर वो बाल्यो—बाबूजी, पाणी लेल्यू दोपारी करणी है।

बाबूजी बीरै चेरै कानी देख्यो। निरमळ मुख पसीनै सू भरयोडो हो। मु डै पर तेज हो। उण री साहस अर हीमत ऊपर छलकै हा। चेरै पर छाई उदात कार्य खिमता साव दिखै ही। उण रा गठयोडा मुज सुपुस्ट वक्ष स्थल पळ मे ई आछी आकृति बणा दीनी। बारी निगावा बाळू माटी सू भरयोडा पगा ताई आयगी। वै बाल्या—आव, अठै छ या मे बैठ! मैं मांय सू गिलास लेयर आवू, वै उठता थका बोल्या—आराम सू नास्तो कर!

बारै नळ हो। वो हाथ धोया। दोनू हाथा मे पाणी भर सजळ धोवै सू मु ह धायो, अर लॉन मे आय र अेक कानी बैठग्यो। बाबूजी बीनै गिलास झला दियो।

वो आपरो नास्तो खोल्यो। बाजरै री दो मोटी-मोटी रोटया अर कोई तीन-च्यार हरी मिरच ही। रोटी रै सागै हरी मिरच तोड र वो निरभाव सू खावै हो। जद मिरच खत्म हुयगी तो वो गमछो भेळो कर परो बाल्या—मडी सू पतकाळी लेयर आवू, कैयर वो उठग्यो। बाबूजी बोल्या तू बैठ! मैं लाय र देवू। वै माय गया अर की हरी मिरच अर गुड लाय र बी युवक नै दे दिन्यो। वो बोल्यो—आप तो पतकाळी रै सागै ओर भी भोत कुछ ल्या दियो साब! परन्तु कठै भी बीरै चेरै अर भावा मे कमजोरी नी ही। हा खावता-खावता वो आ जरूर कैयो हो-गाव सू आया कई दिन हुयग्या। आज काम मिल्यो है। ठर्के-दार सू दस रुपिया ट्रोली रा बोध्या है। दो ट्रोली तो नाख दीनी। आथण ताई दो ओर गेर देवू ला। आप सू मिलणो हुवतो रैसी। कई दिना रो काम है।

सुस्तावै लागो । बाबूजी बूझ्यो—बीडी सिगरेट ?

'ना साब ! था ई आपनै भोत तकलीफ दे दीनी।

"नही था क्या री तकलीफ ! बैठ थोडो आराम करलै पछै काम लागजै ।

युवक बोल्यो—काम काई है साब । माटी गेरणो कोई काम है । मैं तो भोत बडी इच्छा लेयर सहर आयो हो कै कोई चोखो काम करू ला अर पूरै तन मन सू करू ला । पण च्यार-पाच दिन हुयग्या, आज आ काम मिल्यो—माटी गेरणै रो ।

'पण तू तो इणनै भी पूरै तन-मन सू कर रैयो है, मैं देख रयो हू ।

'तन सू कर रैयो हू, साब । मन नै तो लगा मेल्यो है ।

"किसोक काम करणो चावै ।"

'जित्तो मैनत रो हुवै । पढ्यो लिख्यो तो मैं हू नीं बिया फैक्ट्री मे मैनत रो काम कर लेवू । कोई रै घरा भी काम कर लेवू और भी कोई होवो पण तिथ बध्यो काम हुवै । लाधा नी हुवै । मजदूर नै लाधा मार देवै । ठालो बैठ्यो आदमी बेकार हुज्यावै । इणी वास्तै मैं गाव सू आयो हू ।"

युवक री आख्या मे उदात आसावा भरयोडी ही । अर डील पर बीरै नोजुवान हिम्मत थिरकै ही । कीं ताळ बाबूजी सू बाता कर परो वो पाछो आपरै काम लागग्यो । फावडै सू परात भर-भर वो बिना किणी भार भावना रै माटी गेर रैयो हो । बीरै पगा में फुरती ही ।

कोई दस बा'रा दिना रै अडगडै वो अठै काम करयो । अेकदिन बीरो ठेकादार भी उठै आयो—छोगाराम कितरी ट्रोली नाख दि-ी ।

ट्रक्टर आलै सू बूझ लिज्यो, ठेकादार जी । वो जितरी गेरी उतरी मैं आ मकाना माय बिछा दीनी । मनै हीसाब नी आवै । हा, रोजीना च्यार ट्रोली मैं माय गेर परो ई गयो हू ।"

जणा तो आछी—खासी मजूरी कर लीनी !

'पण मजो नीं आयो, साब । आप कोई बडो काम लेवो फेर देखो काम !"

'बडो काम लियो है,छोगाराम । थारै ऊपर छोडू ला वो । तू सैरो ध्यान राखजे अर काम भी करजे ।"

"पण मनै हीसाब नी आवै, साब !"

"वो मैं करलेवू ला कीं दाम—वाम चाहिजै ?'

"मैं भी कैवण आळो हो आटै—दाळ रो हीसाब साथ्यां नै भी देवणो है ।

गांव मे बीरी बूढी मा ग्रर बापू हा। जितरा दिन बो गाव मे रयो, खेतां मे काम कर र ग्रापरै बूढा मा-बाप री टहल-बन्दगी करी पण जद गाव मे काम नी तो वो कै करै? वो किया उठै रंवतो। खेत तो नाव रो हो—दो बीघा। फेर किया गुजारो चालतो। उतारणै रो सरथळ नी हुवै तो माथै भी कीकर करीजै। खेत मे तो गाय-बकरी जितरो चारो भी नी हुयो हार र वो सहर ग्रायो हो। पण गाव मे ई वो सोच लीनी ही कै ग्रब सहर जायर कोई तिय बध्यो काम पकडणो है सो सारो सरतर जम्यो रंवै, वो इणी ग्रास मे ग्रठै ग्रायो हो।

ठेकेदार रो नुवो काम सरू हुयग्यो। छोगाराम नै काम मिलग्यो. वो जरूत रा पीसा ई ठेकादार सू लेतो बाकी ठेकादार कनै ई राखतो। बीच मे बो ग्रेक दो बर गाव गयो तो ठेकेदार माग्या जित्ता पीसा बीनै दे दिन्या हा। गाव ज तो तो वो ठेकादार सू पीसा ले लेतो ग्रर घरा नाज-पाणी रो थळ कर ग्रावतो ग्रर खरची दे ग्रावतो।

ठेकादार बीनै ठेकै पर ई काम दे राख्यो हो। इण वास्तै वो गाव सू ग्रापरै कई भायला नै भी ले ग्रायो हो। पैला वो नीव खुदाई ठेकै पर लेयी। फेर कीं दिना तिथ वधी काम कर्यो फेर छात-गिराई ठेकै पर लेरी फेर घोळव रो काम मिलग्यो, छोगा रै मजूरी पडै लागी।

ग्रेक दिन रात रा वो देख्यो—बीरो ठेकादार मकान बणाया वा मे सू ग्रेक मकान मे कई मजूरा रै साथै बैठ्यो हो। कई बीरी ग्रावभगत मे लाग मेल्या हा। लुगाया रोट्या बणावै ही। छोगाराम कनै ग्रायग्यो। बोल्यो—ग्राप ग्राज घरा नी गया, साब?"

"घरा! ग्रो घर ई तो है! .. ग्रापणो घर! ग्रापा बणायो है—पैला ग्रापा इणरो मजो लेस्या फेर मालिक! थे बणायो है मैं बणायो है इणनै। वो बहकै लागो—दारू पीसी?"

'नहीं साब।"

पीलै भोत मजो ग्रावैला!

"नही साब!"

"ग्रच्छ्या....तो बैठो...यह लावो....।

"नहीं साब!"

"कै नही साब-नही साब लगा मेली है—नैठ ग्रे वोद्या ग्रेक गिलास ल्या!"

"नही साब। आवो मैं थानें घरा छोड़यावूं। आपरी तबियत ठीक नही है!

"कांई कैयो, घरां! आज तो अठै महफिल है–महफिल! तूं देखजे थोड़ी देर में ओ मकान पांच तारा होटल बणण आळो है तूं चिनेक पीलै! लै"! वो बोतल कान हाथ घालै लागो। छोगां बीरो हाथ पकड लियो—नही साब वो आगै बोलतो इतरै मे भैंरियो मेवा री छोरी नै ठहरड़तो माय बड़्यो।

छोगो देखर र दंग रैयग्यो भैंरिया री आख्या छोगा नै देखर मुरझायगी ठेकादार कंवे हो—लेऽऽ आयो!

"हां, साब!" वो नीची निजर्यां पड तर दियो।

लै! वो अेक सोव रो नोट बी कानी कर्‌यो।

छोगो ओ सो साग देखकर देखतो रो देखतो रैयग्यो। वो ठेकादार नं उठा लियो अर कंयो–चालो थे भोत पीली हो। थानें अठै नी रैवणो चाहिजै! म्हारै साथै चालो आ छोरी....ओ सैं कीं ..आछयो नी है। छोगो ना–ना करता भी बीनैं वारै लिआयो। ठेकादार नें की होस पक्कायत हुवैला। वो लडखडातो बीरै सागै हुयग्यो, बारै आयर वो वोल्यो–छोगा, मैं चल्यो जा स्यूं। मनैं होस है। तूं म्हारी गाडी उठाल्या। छोगो बीनैं गाडी लायर दे दी। वो गाडी पर सुवार हुयग्यो छोगो आपरैं थान आयग्यो। पण ठेकादार आपरैं थान-मकान नीं गयो। वो हजार पांच सौ खरच कर्‌या हा। वो कींकर घरा जावतो वो मोटर साइकिल नैं अठी–उठी घुमायर पाछो बिकै आयग्यो-भैंरियो बीनैं भर-भर गिलास दारू प्यावैं हो, बीच-बीच मे वो कैवैहो–लै तूं भी पी अर सैं नैं प्या! सोढमाल थारो ई हो .. ठेकादार बहकै हो....। पण छोगा री आख्या मे नीद नी ही।

☐☐

छोगा रा अर बीरैं साथ्या रा ठेकादार मे खासा पीसा चढग्या। कई दफा छोगो बींसू मागया पण बिन पास हुवणे री वात कैयी। छोगा नैं विस्वास हो कै ठेकादार बीरा पीसा नी राखैं नो पण जद वो 'साईट' पर आवणो बद कर दियो तो छोगा रै पगा तळै री जमी मरकगी। बीरैं गाव रा बीरा लायोड़ा बीरा साथी ठेकादार नें कै जाणं? छोगो मुसीबत मे पड़ग्यो।

, छोगो ठेकादार री भोत बट उडीकी पण वो नी आयो। छोगो टूटग्यो।

अेक दिन आयण रा वो बाबूजी कनैं आयो। पूरी बात बनाई। बाबूजी री सुणर आपणा सण गी। रोडी पर पड्योडी हरी मिरच्या वारी आख्या मे घूमैं लागी। वैं वोल्या–छोगा, तेरी मैंनत पच नीं सकैली बेमोत मरैंलो अेक दिन।

पण प्रबार तो मैं मरग्यो, बाबूजी गांव में बदनामी हुसी । ग्रायो हो कमा-बानै भर ग्रोठो करज कर लियो ...वी री ग्रास्या में पाणी ग्रायग्यो ।

बाबूजी री ग्रास्या सामी वै उत्साही ग्रांख्या जिणा माय वै उभर्योडी ग्राकाक्षावा देखी ही वानै ग्रब वै रोवत्या नै देखै हा । वारो हाथ हवळा-हवळा छोगा रै कार्ध कानी जावै हो ।



माटी री सोरम

रूगा काका रै घरां सूं बारै आयर मैं गोवै पड़ग्यो। आगै पण अळगो रामनियो आपरै ऊंटा नै लियां जावै हो। पून मे अलगोजे री आवाज तिरै ही। ऊंटा रै पगां सूं गयोड़ै गोवै री माटी पोनी होयगी ही। म्हारा पग रूप्या जावै हा, अर गरद गोडा ताईं आयगी ही, फेर भी मैं चाल्यो जावै हो उणरै लारै-लारै। रामनियो अलगोजा बजावतो चालै हो। तान मे लटका करती बी री नाड अब दिखबा लागगी ही मनै। मैं माय ऊ डरै हो पण वो आपरी धुन्न मे मस्त चालै हो। म्हारै अर रामनियै रै बीच मे कोई पचासेक पावडा रो बेछो हो।

रामनिया रा ऊंट आगै जोहड़ कानी जावण आळी गेली मे मुड़ग्या। मनै सिवाय ऊंटा री मुण्ड्या रै की नी दीखै हो। ऊंट जोहड़ कानी जावै हा। मैं निजर आगीनै पसारी, तो देख्यो—लरड़ियां-छाळिया बोलबालो मुंडा मारतो जावै ही। मैं गेलो बदल लीन्यो। चूनअळी बिरामणी रै खेत री सींव रै सा'रै-सा'रै ल्हुकतो छिपतो मैं चालै हो। म्हारै काना मे रूगा काका रा सब्द रै-रै सुणीजै हा। बैजिया, जे तू चिनेक भी चूकग्यो तो तेरै कीं हाथ नी लागै लो।। मैं आख्या झपकाई। चाण चूकै म्हारी निजर्‌या सामै जोहड़ माय जावती भेड-बकरिया माथै जाय लागी। सीतनी वानै टोरती थकी जोहड़ कानी ले जावै ही।

जोहड़ री पाळ सूं की अळगो एक सूनो जाट ऊभो हो। रामनियो अलगोजा बजावतो उठीनै ही जावै हो। सीतनी लरड़िया अर छाळिया नै छोड र उण कानी चाल पडी। मैं देख्यो, वै आयर बी जाट तळै बैठग्या।

मैं कुलबै-कुलबै सरकतो सरकतो आयर सीर री आट म बैठग्यो। कांकी खींप मांकर मनै वारी काची देही साफ दीखै ही। मैं देख्यो, सीतली उण रै अलगोजा खोसणै री करै ही। रामनियो कस्ठ' करै हो बांरै। वा ही सीतली बी री साथळ पर गोडो मेल र बी रै हाथ सूं अलगोजा खोसबा लागी, बो हाथ परै नै लेयग्यो। रामनियै रो सिर जमी पर टिकग्यो। सीतली री देही रामनियै री छाती पर ऊधी होयगी। वा डील रै मठ सरकती अलगोजा मायै हाथ

मारवो चावै ही पण वो हाथ ऊपर–नीचै करै हो। जद सीतली री छोती रामनियँ रो छाती पर टिकी, तो वो हाथ सीधा कर दीन्या। सीतली अलगोजा खोस लीन्या अर उठ बैठी होवगी।

अलगोजा अब सीतली रै होठा सू बतळावण करै हा। जोहड़ो अर जोहड़ै रा जीव सुणै हा, सीतली री बात जिकी अलगोजा मारफत निसर र मीठी होवती बारै आवै ही।

मनै अचम्भो होवै हो कै सीतली इतरा आछा अलगोजा बजाणा जाणै! मैं सीव री ओट मे बैठयो सुणै हो अर कीव मोकर देखै हो। रामनियो सामै भार सू बैठ्यो सुणै हो। सीतली झूमै ही।

जद वा गा परी परै हुयी तो रामनियो अलगोजा कानी चाल्यो। मैं खकारो करयो। म्हारी आवाज वा रै काना ताई पूगगी ही स्यात। वै हाफळ-बाफळ होया देखै हा–अेक दूजै कानी। मनै लाग्यो, सीतली रामनियै नै की कंवे पण मनै नी सुणीज्यो। मैं ऊभो होग्यो। सींव-मीव पाछो चालतो थको आगै कूंचै री ओट मे रहूंतो निसर परो गोरै मायै आयग्यो। पण मन किया ई करै हो। मैं खुद सू ही बतळावै लागो मैं सीतली अर रामनियै रै बीच मे क्यूं आयू? मनै के पड़ी। जे देख्यो है तो साथ देवणो चाहीजै। अचाणचक मनै रूगै काकै रा ध्यान आयो। मैं झुंझळावै लागो .. रूगा काका री बाता मे तू क्यू आवै?... ओ तो अपरी ऊमर अेक घर रा दो घर करया है....छोरी–छोरो दोनू स्याणा है ब्याव नो दोनु वा रो होणो ई है...जे तेरै सू की वर्णै तो तूं वा रो मदद कर आडै मतना आव।. मैं खुद नै देख्यो तो हासी आयगी। बेमतलब बिचारा रै चिन्ता करा दीनी। वै बैठ्या काई सोचता होसी। स्यात उठ र ढूंढता फिरता होसी-मनै! मैं सोचतो थको चालै हो। रूगा काका नै कैय देवू ला, सीतली अर रामनियै रो ब्याव कर देवणो चाहीजै। ज रामनियै रो बापू नी मानै तो मना लेवणो चाहीजै।....सीतली अर रामनियै रो प्रेम साचो है। मैं चिमक्यो–कठै वा रो प्रेम ई तो म्हारै चोधड़की नी फेर मेल्यो है। आगै बडआळी ध्यावू आयगी। मैं दमघडी ठेरग्यो ठडी छाव मे। पण मन नी ढम्यो। वो म्हारै साम्ही सीतली री वकालत करै हो—प्रेम करणो कोई अन्याय थोडो ई हो! तू जे मिनख है तो वारो पक्ष लै। छोरी स्याणी है। छोरो कमाऊ है।....फेर तनै आडै आवणँ सू मिल के जासी? के तू वानै छटपटाता नै देख र राजी होवणो चावै?.... इण सोवणै प्रेम री हत्या मतना करा.. रूगा काका री रतनूजी सू खीचा ताणो है, इण खातर वो बात उडावै अर तनै भी माय धीमै। आज तू वह द– काका, तू झूठी बाता उडवै।. सीतळी अर रामनियै रो मेळ तू देख लियो है।

अब वानै अलोमदा करणो पाप है। .. म्हारी आंख्या मीच र खुली। चाण चूकै म्हारी आख्या सामै बड रै दूध रो टोपो आयर पड्यो। मैं देख्यो—कबूतर-कबूतरी अेक कंवली डाळी माथै बैठ्या बातां करै हा। मनै सीतली अर रामनियै री याद आयगी।

मैं ऊभो होयग्यो। ल्गा काका रै घरां पूग्यो तो काको आपरी पोळी मे बैठ्यो हुक्कै सू बतळावै हा—कुटड-कुटड। अर धुवो निसरै हो मुडै सू। मनै देखता ही वो बोल्यो-सुराग मिल्यो? उणरो हाथ धोळी मूं'छ्या सूं उतरतो थको डाढी रै नाकै ताई आयो।

"काका!" छिण माय सीतळी अर रामनियो सूखै जाट तळै पसर्योडो म्हारी आंख्या मे आया। पळ मे ही म्हारै मुडै मू निसर्यो "की नी मिल्यो, काका। लोग इयां ई भूठी बाता करै।"

"बेंजिया, आ तो हो ई नी सकै।" कंवर काको फूंक सारी अर छोड दीनी।

"म्हारी आख्या साख भरै, काका। जे आपरी अणुभवी आख्या आ री साख नैं ओळख सकै तो आप देखल्यो!

ल्गो काको म्हारी आख्या मांय देखै लागो। मन डर लागै हो, कठै बीनै सीतनी अर रामनियो आ माय सूखै जाट तळै पसर्योडा नी दिख जावै। आख्या झपकाय र मैं पूरी खोल दीनी। ल्गो काको पळेक म्हारी आख्या कानी देख्यो अर बोल्यो, "मनै तो काळा मणिया दीखै, बेंजिया!"

"अैं तो थारै है भी है, काका।"

"तूं ठीक कवै। तेरी अर मेरी दोनुंवा री आख्या मे ई है—काळा मणिया।" कंवर काको लाबो सास भरी अर आपरा होंठ हुक्कै री नळी रै लगा लीन्या। मनै लाग्यो, "काको म्हारी बात जाणग्यो है। मैं कंयो, "काका, रतनूजी रै घर री इज्जत फर-फर उडण लाग री है। रामनियै अर सीतली रो ध्यान र देवणो चाहीजै अब।

"तू वो देख्यो लागै!"

"ना, मैं सोचूं हूं काका।"

"मै भी सोचू हू. तूं जा!"

मै उठग्यो। घर जावणै री बजाय मै पाछो गावै पड्ग्यो। जद मैं जोहड मे पूग्यो तो मनै ऊट लरडिया अर छाळिया रै मिवाय नी नी दिस्या? मै आयर बी सूखै जाट तळै बैठग्यो। म्हारी आख्या सीतनी अर रामनियै नै

जोवै ही । वैं नी दिख्या तो मैं सरक र बीं जगां आयग्यो, जठै वैं बैठ्या हा । बीं जगा री माटी री मैं लप भरी अर नाक सामी लेयग्यो । मैं सूंघी तो मनै बी मांय सीतली अर रामनियै रै प्रेम री सोरम आयी ।

अचाणचक मनै गुसर-फुसर सुणीजण लागी । मैं कान खड्या कर लीन्या । आवाज अठै ही कठै आमैं-पामैं सूं आवै ही—देख रामनिया, रूगा काका री मेरै बापू सूं अदावत है । वो बातां उडावै मेरी । वो बापू सूं बदलो लेवणो चावै । तू कठै बदल मतना जाये । मेरी काया री सोरम लेयी है तो इणरो मिणगार भा बणजे ।

"मैं बापू नैं कह दी'यो —मीतनी, आपणै घर री बहू बणैली, बापू !"

"तो तेरो बापू काई कैयो ?"

"मुळक्यो ।'

"तू मैं पढ़ नर दियो '

"मैं पूछ्यो—क्यूं बापू ? तो बापू कैयो —रतनूजी सूं आपणो सगपण नी हाय सकै । क्यूं कै रूगै काकै री छोरै री सगाई जद अरुसाहर आछै घर म होवै ही ता वैं भिचकी देयी ही । मुकनजी रै सासरै वाळा नैं बीं रतनूजी री ई तै ही । मुकनजी रै मौत नैं काको कदेई नीं भूल सकै । भायां नैं बेराजी कर पापां ता ब्याव वो नी करां । छारिया रा माटो बोली । थोड़ी ताळ बोलबोना । फेर मीतरी री आवाज सुणीजी तू काई कैयो ?

"रूगा काका आपरी जाणै आपां वां री रार में क्यूं पडां !

' इण पर तेरा बापू काई कैया ? '

' भायां रो काम है ।"

"तू काई कैयो फेर ?

'तो फेर थे थारै भाया म रैवो ! मैं तो आहूडै म ऊट चराबूं, उठै ही रैवूं, जे थे नीं मानस्यो ता घर उठै हा रैवो करसूं । क्यूं करां बापू ! इणै म मां आगी । मा म्हारी बात नैं समझती थकी बोली, इणजी आपरी जाणै, आपानैं काई मतलब । म्हारी राम आछी है, आपां तो ब्याव र मानस्यां । ई पर बापू बोल्या —भाया म रैवणा है क नाही ? मा बोली—तो थे होगसो ! बानै र आई रानी थाय । जे बां मर जासी ता आपां नैं ही मर जाणो । ई पर बापू फेर बोल्या —फेर मा-बेटी देखस्यो अर समझ में आवै जिया करस्या, तेरा-मेरा ब्याव हुवैला कोनी !

' है इण मोतली बन्नो रामनिया । आता-पाता भाभा दें'र, मोवणा-भावणा मेवा ई र समझ र ए तू जो मरैं परी ...!"

मैं खांस्यो । आवाज बन्द होयगी । मेरी निजर उण जगां टिक मेली ही जठै सूं आवाज आवै ही । मनै लाग्यो, उठै कोई उंडो खाडो है । अर खाडो सणियां अर खींपा सूं छायोड़ो है । खींपा मायँ माटी है स्यात इणी माय सीतली अर रामनियै रो प्रेमालाप चाल रैयो है । पण सामै रामनियै नै माय सूं बारै निसरता नै देख र 'स्यात' सांच रै नेडी आयगी । मनै देखतां ही वो सरमायो, पग लारै सरक्या पण किणी तरियां चाल र वो म्हारै नेड़ै आयग्यो अर बोल्यो—"वैजू भाया, किती क ताळ होयगी आया नै ?"

"भोत देर सूं बैठ्यो हूं ।"

"है !" बीरै चैरै पर हैफ पसरग्यो । टूटयोड़ा सा सब्द बीरै मुंडै सूं निसरया—"जणा तो थे . ।"

"हां, पण तूं किण सूं बतळावै हो ?"

'अं अं अं ...।"

"बता !"

"सीतली सूं ।"

'कठै है वा ?"

"खाडै मे !"

"खाडै मे !! बुला बीनै !"

वो हेलो करयो—सीतली बैजू भायो है, आज्या ! मैं देखै हो—सीतली सरमाती थकी खाडै सूं बारै निसरै ही । भेळी हुयीसी वा माय र अेक कानी बैठगी । मैं वात सरू करी—'सीतली सुण्यो है,तूं अलगोजा भोत सातरा बजाणा जाणैं ?"

"थे कद सुण्या, भाया ?"

"सु वारै बजावै ही न !"

"तो थे ही खास्या हा, भाया ?"

"हा ।"

"वा सरम सूं भेळी होयगी । मैं कैयो अलगोजा सुणावैली ?"

"ना ।"

"क्यूं ?"

"थे म्हानै देख्या क्यूं ?"

बीरी नाड़ अजै ताईं भी कोनी उठी ही । म्हारी निजरयां बीरै भेसा में तिरै ही । मैं सोचै लाग्यो—काई जवाब देयूं ? थोडी ताळ पछै मैं बोल्यो—'इयां ई गेलै बगतो देख्यो हो । ओर कोई बात कोनी ।"

थोडी ताळ चुप्पी । कोई नीं बोल्या । फेर रामनियो सीतनी कानी देख तो

बोल्यो,' 'अलगोजा ल्यावूं ? सीतली'री निजरघा ऊपर नै उठी । रामनियो देख र थारी भासा समझी अर फेर खाडे कानी चल्यो गयो । पाछो आय र सीतली रै हाथा मे अलगोजा देवतो वो बोल्यो, "बैजू भाया, म्हारा तो औ खाडो ही घर है । जे आप लोग आडे आस्यो तो, म्हे तो फेर अठै ही रोटी बणास्या !"

मनै लाग्यो जिया वो म्हारै चलपट मेलै देयो होवै । मैं कैयो, "तू गळत सोचै । मैं थारै आडै ती काम आवूंला । जे कोई भी 'जान नी' चढयो तो मैं चढूंला ।"

"आप गुणी आदमी हो, भाया ।"

सीतली नीची नाड करया बैठी ही । छीट रै घाघरियै री लाल मंगजी नै दोनूं हाथा री आगळया सूं पकड्या वा की सोचै ही । घाण चूकै ओढणी सिरै सूं सरकी तो वा हाथ लेरानै कर-कर पाछो सिर ढक्यो । रामनियो नैडै बैठ्यो कैवै हो—बैजू भाया सू काई सरमावणो सीतली, अै तो आपणा बडा भायी है—बाप री जगा, सुणा !

सीतली रो ध्यान टूटयो । वा अलगोजा हाथा ले लीन्या । मैं देखै हो - सीतली रै होठा रै लाग्योडा अलगोजा सुर काढै हा ।

जोहडो पसरयो सुणै हो-सीतली रो अलगोजा सू निसरतो मन री बात ! मैं गीत मे गमग्यो ...रामनिया ई तो है ई रो भवर ...कुरंजा । ..सने सो .. .. अर मैं !.. हैं !!!

सीतली गीत पूरो करै ही । रामनियो बैठ्यो हो । अलगोजा होठा सूं परै कर र वा बोली—भाया, म्नै तो इसा ई आवै ।"

'कमाल है, सीतली ! इसा तो मैं पैली बर सुण्या है । छोरी रै मुडै सू अलगोजा री आवाज कोई जो बिरलो ही सुणी हुवैला !"

रामनियै रा आ कळा सीतली नै सीखावण सारू मगर थपथपावतो मैं उठयो तो वै भी साथै उठया । रामनियो आपरै ऊंटा नै घास करया अर सीतली आपरी भेड-बकरिया नै । मैं पिछम कानी देख्यो-सूरजी रा रग खुसी सू हिंगळू बरणो होयग्यो हो । मैं आगै चल्यो गयो । वै लारै आवै हा ।

रात नै मैं रतनूजी सू मिल्यो । रूपा काका सू बात करी पण बात चिरकै कोनी आयी । मैं सुवै रगै कार्व सू पैरू बात करी, "काका आप क्यू आट देवो हो ?"

"मुकनडी री ल्हास तूं देखी ही न, बस इण वास्तै ई ! कारो अेक लाम्बी सास लेयो । मैं हामी भरी—"हा काका ।"

'तो समझनै ! जे रतनूजी नै माटी मे नीं मिलायो तो मेरो नांव रूपो

नहीं !! वो सास लेयर बोल्यो—"बदलो लेवूं ला, बेंजिया, लियां बिना नीं रेवूं।"

"पण काका सुणवा में आयी है के वे दोनूं जणा ई ब्याव रचाय रेया है।"

"आ किया हो सके !" वो सोचे लागो।

"ओ तो ठाह कोनी, काका !"

"मैं देख लेवूंला। जे रामनियो बी सू ब्याव करयो तो सीतलो रा का ई दुरगती होवेली जिकी मुकनडो री रतनूजी करवायी ही।"

"मुकनडी री गडासिया सू छुरी तरिया काटयोडी मिरत देही म्हारी आंख्या मे तिरया लागगो। मैं घबरयो अर कैयो, "पुराणी बाता नै गयो देवो, काका। या तो कोई होणहार ही सो होयगी।"

"होणहार कोनी ही बेंजियां, ईं रतनूजी रै बच्चै रो करवायोडो काम हो।"

"थे बड़ा हो, काका।"

"ना माफी नहीं दे सकूं, बेंजिया।"

मैं उठग्यो। रूगा काका रै घरा सू निसर र रामनियै रै घरां कानी चल्यो गयो। बीरै बापू सू मिल्यो। बातां-चीतां करी। रूगो काको घूंटी दे राखी ही बीनै, वो टस सू मस नीं होयो। पछपोछटी मे, मैं बूझ्यो, "जे रामनियो थारै ओलै सीतली सू ब्याव कर लेवै ?"

"वो म्हारै सू गयो !"

"पर थे बीं सूं ! आ ही बात है न ?"

कनै बैठी रामनियै री मां कानी मुडतो थको मैं बूझ्यो, "क्यूं काकी थारी काई राय है ?'

"वा ही जिकी रामनियै रै बापू री है।"

रामनिया री मा भी बदलगी। मैं उठग्यो। रतनूजी कनै गयो, तो वै आपरा रोवणा सुणावै लागा—छोरी है बदनाम करण में लाग मेल्या रै —किया ब्याव होसी ?"

"लोग बदनाम नो करै, साची बात कैवै है !"

"थे कैवो !!" चेहरै पर हैप हो बारै।

"हां ! रामनियै रै साथै ई सीतली रो ब्याव होवेला।"

"थे रहारी करा !"

"किया ! थै समझो कोनी !"

मैं रतनूजी नैं आखो बात समझाई । वैं मानग्या । मैं बारैं आयग्यो ।

☐ । ,

ज्यूं ही रतनूजी कन्यादान करयो कै गांव कानी सूं रोळा सुणीजण लाग्या। देवजी पडत रो ध्यान भी उचटग्यो । वैं फटाफट काम सलटावण मे लागग्या ।

जोहडी री रौनक मे विघन पडतो साव दिखै हो । रामनियैं रैं बापू रैं साथैं दो-तीन लुगाया बुरी तरिया रोळा करती आवै ही । वारैं लारैं रूगो काको आवै हो । मैं उठ र खेजडं कनै आयग्यो ।

पण पडत जी आप कानी सू काम रूल्टा दिन्यो हो । परैं सूं रोळा करतो रामनियैं रो बापू म्हारैं कनै आय र बोल्यो —म्हारैं वेटैं रो ब्याव करावण आ ळो तूं कुण है ? ओ ब्याव अबैं ई हुस्ट है ।

"हुस्ट तो रामनियैं रैं करया होसी काका । मैं कोनी करयो ब्याव, रामनियो करयो है ।"

"अं सैं तेरा काम है ।"

"जे म्हारो काम है तो मैं थारैं सू की लियो कोनी, देय रैयो हू — सोवणी वहू ।"

"म्हानैं कोनी चाये ।"

इतरैं मे रूगो काको आयग्यो । अब तेरा कै मेरा ! कडकती आवाज मे वो कैयो, "कुण तनैं चौधरी थरप्यो . कुण कैयो कै तू ओ ब्याव रचाय .. लाठी फटकारता थका वो बोल्यो—कमीण रो सिर भागबा दं !....

मैं लाठी पकड लीनी अर बोल्यो, "काका, सिर तो भलाई भाग दीज्यो पण ओ घर मतना भाग दीज्यो ! म्हारो हाथ खाडै कानी गयो ।'

"आ बदमासी बरदास्त नी हुवैली ।"

"माफी देवो, काका !"

"माफी !!" वैं लाठी छुडावणैं री कोसीस करैं लागा । पछोछडी मे मैं कैयो, 'काका ओ वूढो जाट ऊभा हैं नी! कितो सायत है! इण सूं सीख ल्यो!"

'पण वैं मान्या कोनी । मैं देखू कै सोतली अर रामनियो आराम सू जोहडै मे रैवैं । कदे कदास मैं मिलवा नैं जावू तो रामनियो कैया करैं— गांव री गध सूं म्हे तो अठैं ही ठीक हा भाया । अर वो आ कैय र म्हानैं झकझोर देवैं। मैं सोचबा लाग जावू अर देखबा लाग ज्यावू अेक नु वो जीवन-दसरण—रामनियैं री बात माय भरयोडो ।

☐ ☐

राई-राई रेत

दोफारी ! नीम री डाळी माथै सुळबुळाट । चिडी री आपरै साथी सूं मुलाकात ।

बात ! बात मे दोफारी जितरी री जितरी गरमी । इण गिरमी माय नीम री छाया तळै अेक कानी अेक कीडी आपरो घर बणावै । मुंडो भर-भर रेत लायर बारै नाखै । रेत रो ढिग । आदमी री इण कानी पीठ है । सामै बैठी ज्योत्सना कैवे, "इण तरियां मतना कर अजय नही.... ...!"

मुह फेर्या बैठ्यो अजय ज्योत्सना री बात तो समझग्यो पण वो आपरी ई गावतो बोल्यो, "म्हारै कनै और उपाय कोनी।"

"उपाय है अजय पण तूं करै कोनी ! तूं के वेरो काई सोचै । गेलै री बात दर नी करै । जे तूं इया करसी तो बता, म्हारो काई हुसी ?"

"हुसी काई ! म्हारै बिना भी तो की हुवतो, वो ई हुय जासी ।"

"वो कोनी हुवै अजय वो कोनी हुवै ।"

"तूं गळत सोचै ।"

"ना, चिनेक ठैर परी वा बोली, 'तू चिनेक थारी गळती नै भी देख, अर फेर सोच अजय कै मैं गळत सोचूं हूं के ?"

अजय री जीभ तालवै चिपगी । पण सरम नाखतो वो बोल्यो, "वा थारी अर म्हारी दोनुवा री भूल ही, म्हारै अेकलै री गळती कोनी ज्योत्सना ।"

"बात बात मे गळती भूल बणगी अजय !!" ज्योत्सना रै चेरै पर अचम्भो हो । अजय आपरी गळती नै झाळ री चादर सूं लुकावतो बोल्यो, "तूं फगत म्हारै कानी ई देखै, थारै गेलै कानी कोनी देखै । जे गेलै कानी देखै तो आ बात ही कोनी हुवै ।"

"ज्योत्सना बोली, "पण आ बात आज क्यूं कर हुय रैयी है, इतना दिन क्यू कोनी हुयी ?"

"इतरा दिन मैं थारै प्रेम मे गैलो हुयो घूमै हो ।"

'तू दगो करै, धोखो देवै अजय !"

'ओ धोखो कोनी, ज्योत्सना, जिन्दगानी री जरूरत है। भावुकता म बैवणो बुद्धिमानी कोनी।"

'तू म्हारी भावुकता रा गुटक्या लेयर बदल रैयो है अजय।"

'नहीं मैं जिन्दगानी रै साचै अरथ नै जोय रैया हू ।

'पण के ओ म्हारै सायै धोखो कोनी ? अजय रै चैरै पर आपरी आख्या टिकायर बा बोली 'अजय, थारी बात रै सायै चिनक म्हारी बात नै भी विचार। थारै साचै प्रेम री सोगन म म्हारी गलाई नै भी धार ! तू अब मनै विसराय मनना म्हारी आनड्या रै दरद नै समझ ।'

अजय रै ज्योत्सना री कवळी बाता कठै नी लागी। वा बोल्यो— तू भरम नै वडो कर रैयी है ज्योत्सना। इण उमर मायै चालतै पगां रै घूघरा हुवै, अर वै वाजै ही।

'अै तो थारै भी हा।

'मैं कद नटयो।

'अब नट रया है नी।

'मै नी नटयो ज्योत्सना म्हारी जिन्दगानी नट रैयो है।'

'तू कोनी नटै ?

'म्हारी जिन्दगानी ई नटै।'

'क्यू बापडा जिन्दगानी रो नाव बदनाम करै अजय ! तू हा कर दिस्या बोलै भी के ?'

आ नी बोनै जणा ई तो मनै बोलणो पडै ज्योत्सना।"

'तू आटा काढै।" की सोचती थकी व बोली 'अेक बात कैवू अजय, 'किणी री जिन्दगानी नै मोसणो आछ्यो काम कोनी है, लबी सास लेयर वा भळै बोली 'लागै तू किणी चक्कर मे है।"

अजय बोलवानो रैयो।

ज्योत्सना बोली 'ज तनै इण तरियां ई अपणै आपनै गिरावणो हो तो प्रीत नै मैली नी करणै री ही अजय। तू प्रीत सार की नी जाणै। मनै अ धारै म रात र तू खुनी ढूढै तो देख ली जै अेक दिन आ थारी खुसी ही तनै बटका सू खावण लाग जावैली।

अजय मुळक्यो अर बोल्यो मै म्हारो आगो-लारो चोखी आछी तरिया सू समझू, ज्योत्सना।"

'क्यू कै तू सुवारथी है, निसरमो है।

ज्योत्सना री बात रो अजय पर की असर नी हुयो। ज्योत्सना बैठी कैवै

ही, "खोदै, वो ई पड़ै अजय। देख लीजै, खाडो तूं ही खोद रैयो है।"

चाणचूकै नीम रै दरखत माथै चिड़्या री चूं-चूं री आवाज सुणीजी। अजय री निजर नीम कानी गई। अचाणचक वो चिमक्यो, अर बीरै मूंडै सूं निसर्यो—बाऽऽ डीऽऽऽ!

ज्योत्सना लाम्बी सास लेयर बोली, 'हा अजय बाडी ई है।"

अचाणचक चिड़्या उडर चलीगी। यूनिवर्सिटी लॉन मे गिरवाळा ऊभा मैंदी अर नीम देख रैया हा–वा का ी।



ज्योत्सना अेक मध्यमवर्गीय परिव र री लडकी ही। उण रा बापू बिहारी लाल लखनऊ में लेच्चरार हा। अजय रा बापू बुनकर हा। ज्योत्सना फिलोसॉफी डिपार्टमेंट मे पढै ही, अजय साइकोलॉजी म पी एच डी करै हो। ज्योत्सना इण बरस फाईनल ईयर मे ही।

ज्योत्सना फर्स्ट-इयर मे पढली जद सूं ही अजय बीरै नेडै आयग्यो हो। बा बीरै वर-बर मे केवणैं सू ई आपरो मनो बणायो हो पण आज तो वा खुद इज बदलग्यो। वा प्रीत नै प्रीत सू परखारै देखै लागी। जिको अजय जात-पात नै फेर बतावतो वो ई सागी अजय आज आपरो उणिगारा आपरै समाज मे देखै लागो! स्यात् वो कठैऊ ई बडकग्यो हो।

ज्योत्सना बीनै आपरै उणियारै री बात भी बताई पण वो अेक नी मानी। ज्योत्सना री बात री बी पर रत्ती भर असर नी हुयो। वो बीनै अध्धर मे छोड दीनी। जद अजय आपरै ई समाज मे अेक व्योपारी अमीलाल री बेटी रीता सू ब्याव रचायो तो वा घायल सरपणी री दाईं फुफकारी पण बीरो बस नी चाल्यो। आपरै बापू रै इज्जत रै किंवाडा मे कैद हुयर वा बोलवाली रैयगी। बीनै लाग्यो जाणै, वा अधारै सू काठी ढकीजगी है। आपरै स्टेडी रूम मे बैठी वा मन मसोस र रैयगी। तरै-तरै रा विचार दीमाग माय तिरवो कर्या।

आज वा बैठी भविस नै मोसै।



पी एच. डी कर्यां पछै अजय यूनिवर्सिटी मे ई लेक्चरार लागग्यो। ज्योत्सना इण साल पी एच डी सारू आपरो रजिस्ट्रेसन करवायो। यूनिव-सिटी मे कदे-कदास आता-जाता वै मिल जावता तो मामूली 'हैलो' हुय जावती। ज्योत्सना आपरी निजर्यां सू बी कानी देखती तो अजय नै लागतो कै ज्योत्सना

मर्वे भी वी कानी देखें।

भदृबयोई अजय रै मन मे भरम।

वा दुखी...

रीता रै ऊची-ऊची जगा जावणें अर बीरैं सुघड़ सुभाव सूं अजय रो रूग-रूग दरद करै। बीनैं यारैं मठैं रीता रो जावणो दर पसद कोनी पण फेर भी वो रीता नैं की नी कैवें। जद रीता बीनैं दकियानूस बतावें तो नी जाणें वो क्यू चुप हुय जावें।"

रीता रा सबध बधता ई जावें हा। लारलैं दिनां सुणना मे आई कै अब तो बीरी मिनिस्टरा ताई मे भी बूझ हुवैं लागी।

रीता आपरा ई काम काढती, मॅडी बात नी ही, अजय सारू भी वा जतन करती। अजय रो इतरो वेगो रीडर बण जावणो डिपार्टमेंट मे खास अचम्भें आळी बात कोनी ही। रीता अजय नैं प्रोफेसर बणावण सारू आपरै तन-मन सू जतन करै ही।

अजय जद-कद आपरो उणियारा रीता मे देखतो तो नीं जाणें वो क्यू नी बोलतो।

रीता रा अेक इंजीनियर फ्रेंड बीनैं फर्स्ट-क्लास बगलो बणाय र दियो हो। अजय रीता रै सागै इणी म.य रैवें। सुण्यो है, लारलैं की दिना सू अजय नैं वो बगलो खावण नैं आवें लागो। रीता री हरक्ता बधगी। अबै ज्योत्सना बीरी छाती चढै लागी।

अेक दिन अजय यूनिवर्सिटी लॉन म ज्योत्सना नैं 'हैलो' कर परो रोकी। कनै आया पछै बो सू की नी बोल्यो गयो। जद ज्योत्सना री वाली सुणीजी तो वो बोल्यो, 'ज्योत्सना, जे कोई आदमी गेलो भूल जावें तो बी नैं सिजा मिलें ?'

ज्योत्सना मुळकी अर बोली, 'मिलें।"

'काई ?"

'मौत।"

ज्योत्सना कैयर गम्भीर हुयगी। अजय रैं मूडै सू निसर्यो इतरी .. करडी सिजा !"

"हा।"

'उमरकैद।"

"मनैं आ इज चाहिजै।"

"चाहिजैं सो ई मिल मेली है, अजय ! किणी नैं देवणें री दरकार ई कोनी।"

अजय गम री घूट गिटी अर बोल्यो, "बडो जी अमूजै ज्योत्सना, मनै अब........!"

'पण मनै अब रोसनी आछी नी लागै।"

'मैं उकतायीजग्यो, ज्योत्सना।"

'तू थारी भोग अजय।"

"पण अब !"

"रीता सू पिंड छुडावणो काई सोरो काम कोनी, बडी ऊंची-ऊंची जगा पहुंचै बा।"

अजय रै अ तस रै गैरी चोट लागी। उण रो हाथ उण रै गाल कानी गयो। भरभरायीज्योड़ै गळै सू वो बोल्यो "इया मतना बोल, ज्योत्सना।"

'क्यू।"

मैं घायल हू।"

"पण मैं डाक्टर कोनी, अजय!" ज्योत्सना कैय र आगै निसरगी। अजय बी कानी देखतो हो रैयग्यो।

दरद लिया आयर वो आपरै केबिन मे बैठग्यो। चाणचूकै फोन री घंटी बाजी। वो बिना मन सू चोगो उठायो अर बोल्यो, "हैलो!"

उठी नै सू रीता री आवाज आई—मैं किणी जरूरी काम सू मसूरी जाय रैयी हू। आप चालो तो अबार ई आज्यावो।

"म्हारो मन कोनी।"

'तो मैं काल आवू ली।"

'पण तू आज मतना जा, म्हारा दोस्त घरा आसी।"

"अर म्हारा दोस्त र?"

'बासतै लागै थारै दोस्ता रै।"

"अर थारा रै र?"

"मैं कैवू, कठै नी जावणो है।" कैय र बो चोगो पटक दीन्यो अर टेबल रै माथो लगाय र बैठग्यो।

अबूझ विचार अजय रै माथै माय तिरै। चाणचूकै रीता आई। अजय नै इण तरिया बैठ्यै नै देख र वा बणावटी अचम्भो करती बोली, "अजय, काई हुयो थारै! सरदा तो है?"

अजय रीता नै लाल आंख्या सू देख्यो अर बोल्यो, "म्हारै की नी हुया! तू अठै क्यांरोटी आई है?"

"थारी परमीशन लेवण नैं । मैनेजर साब रो मंसूरी प्रोग्राम है वैं पण थाव सूं साथै चालण साम्ह कैयो है । चालो, आछ्यो रैसी ।"

"मैं कोनी जावूं ।"

"तो मैं चली जावूं ?"

"नहीं !!!"

"आज थारै काई हुयग्यो, अजय !"

"की नी हुयो ।"

"मैं 'यस' कह दीनी बीरो काई हुसी ?"

'तो जा पण .... ।'

"काई ?"

"उठै ई रैजे, ओठी अठै मतना आजे ।"

"तूं दकियानूस है । हर बात नैं गळत 'अंगल' सूं सोचणो सरू कर देवै । मैं कैवूं साथै चालो, उठो ।"

अजय उठग्यो । रीता रै साथै घरा आयो, गाभा बदल्या अर अटेची माय जरूरी सामान जचाय र वींरै साथै हुयग्यो ।

गेलै मे वींनै ज्योत्सना मिली ही ।

□ □

'हैलो !"

'बधाई हो ।"

"आपनैं भी ।"

ज्योत्सना अर अजय आप-आपरी बधाई माथ देखै । अेक बणै,अेक टूटै । ज्योत्सना कैवै, 'बेटो हुयो है, मिठाई भी नहीं !"

"वो म्हारो बेटो कोनी, ज्योत्सना । रीता रो बेटो है –रीता .... रो ... बेटो !

"रीता रो बेटो !!!"

"हा ज्योत्सना । तू कोई दूजी बात कर ।"

"अंडी काई बात है ?"

"मैं उण सूं अलायदो हुयग्यो हू ।"

"पण वा थारै सूं कद अलायदो हुवण आळी है। अजय, थारै जैडो आदमी बींनै दूजो नी मिलणै रो ।"

"भलाई मतना मिलो ।"

ज्योत्सना लाम्बो सांस लेयर छोडती थकी बोली, "लुगाई पातळ हुवै अजय, लोग लावै अर बणा देवै।"

"ना ज्योत्सना, लुगाई-लुगाई इज हुवै।"

"तो फेर आदमी गळी रो कुत्तो हुवतो हुसी....।"

"थारी बात सही है, ज्योत्सना। आदमी नै आप रै उणियारै मैं समझणो पडसी।"

"समझणो तो अजय लुगाई नै पडसी नहीं या दोगला आदम्यां रै हाथां हैरान हुवती रैवैली अर हुवती रैवैली अजय, कठै अन्त नी आवैलो।"

"पण रीता भी तो लुगाई है, ज्योत्सना... .. बी साफ भी तो......।"

ज्योत्सना रै चैरै माथै झेंप चढगी। अजय बात बदलतो बोल्यो, "हूं आपरै लेक्चरार बणनै री मनै खुशी है।"

"अर मनै आपरै बेटो हुवणै री।"

ज्योत्सना झेंप अजय नै पकडाय र आगै निसरगी। अजय उण कानी देखै हो।



अब वो अेकलो हुवग्यो। मसूरी आळी घटणा सूं वो भोत दुखी हो। छेवट वो रीता नै कह दीन्या "रीता, आदमी सांतर कोनी हुवै।"

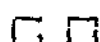
"पण आदमी भी हुवै नी! मैं तो आज ताईं आदमी कोनी देख्यो। अजय, 'मेरीज' रो मतलब विमेनसूलिव पर'इमरजेन्सी' नी हुवै। आप ई बतावो,आदमी क्यूं लारै भाजै?'

"मैं नी भाजूं।"

"आप नी भाजो! के ज्योत्सना सूं आपरा ताल्लुकात नी हा? के आप म्हारै साथै ब्याव नीं करयो!! आजादी भोगणियै आदमी नै लुगाई नै भी आजादी भोगण देणी पडसी। ... .. किती बेजा बात है कै आदमी पाप करै तो आछ्यो अर लुगाई करै तो माडा!!! समाज मे वै दोनू रैवै, अजय!...... मिनख रो आ के मुरखदाई है?.... मैं अैडै आदमी पर सौ वर थूकू, अजय! ब्याव रो मतलब लुगाई सारू जेळ नी हुवै। ......आदमी अर लुगाई दोनूं समाज रा अंग है। अेक खुल्लो घरो अर दूजो भूखा मरै, आ नी हुय सकै!!! जिको आदमी आ सोचै वो फगत आपरै सुख रो ई सर-तर करै जिणनै अब लुगाई बरदास्त नी करैली।. अजय. फगत आदमी ई लुगाई नै 'अपमानित' करै अर सुख भोगै। लुगाई रै मुख माथै कुस राखणियो आदमी

कायर है, जुलमी है डरपोक है ...मूरख है ! .

अजय रीता सू अपमानित हुयो ।



अबै वो आपनै 'इजी फील' करै हो । स्यात अठै उण रै काळजै मे ज्योत्सना सारू कठै ई जगा बर्ण ही । अेक दिन वो ज्योत्सना सू मिल्यो अर कैयो, "ज्योत्सना, जिन्दगानी रो उणियारो आदमी खुद है। समाज भोत वैकग्या है । पिछम कानी इतरा लागग्यो है कै अबै तो सकल ई पिछाणती मे को आवैनी । म थारै माय अपणेस लखावै ।'

'आ थारो वैम है, अजय ।"

'वैम दूर करणो चाहिजै नी, ज्योत्सना ! मनै माफी दे दे।'

"दड बिना नी।"

'वता, काई दड देसी ?"

"अग्निप्रवेस ।'

'मैं जळ जासू नी !"

"इयां तपीजै कोनी ।"

ज्योत्सना कैयर आगै निसरगी । यूनिवर्सिटी लॉन मे आज भी अलायदा ऊभा मैदी अर नीम वा कानी देखै । दोनुवा रै बीच दूरी है ।

कीड़ी कनै ई आपरो घर बणावै । राई-राई रेत मुहडै सू लायर बारै नाखै । रेत रो ढिग । आदमी री पीठ है—इण कानी ।



बी. एल. माली अशांत

गाव लक्ष्मण गढ़ (सीकर)

शिक्षा : एम ए (अर्थशास्त्र) एलएल.बी.

प्रकाशित पोथ्यां :

किली-किलो कटहो	(कहाणी संग्रह)
राई-राई रेत	(")
मिनख रा खोज	(उपन्यास)
माटी सूं मजाक	(निबन्ध)
बोलता आखर	(नाटक)
बंजू	(बाल उपन्यास)
पिटू बाबू	(बाल उपन्यास)
बिलानियो दादो	"
कुचमादी राजू	"
दूधिया दांत	"
तारा छाई रात	(निबन्ध)
दसखत	(कविता संग्रह)

अनुवाद :

एलिस इन वंडरलैंड

डेविड कॉपरफील्ड